रजिस्ट्री सं. डी.एल.- 33004/99 REGD. NO. D. L.-33004/99

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

सी.जी.-डी.एल.-अ.-04022020-215916
CG-DL-E-04022020-215916

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)
PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 379] नई दिल्ली, मंगलवार, जनवरी 28, 2020/माघ 8, 1941
No. 379] NEW DELHI, TUESDAY, JANUARY 28, 2020/MAGHA 8, 1941

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 23 जनवरी, 2020

का.आ. 411(अ).—प्रारुप अधिसूचना भारत के राजपत्र, असाधारण में भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन, मंत्रालय की अधिसूचना सं. का.आ. 2321(अ), तारीख 3 जुलाई, 2019, द्वारा प्रकाशित की गई थी जिसमें ऐसे सभी व्यक्तियों से, जिनकी उससे प्रभावित होने की संभावना थी, उस तारीख से, जिसको उक्त अधिसूचना को अन्तर्विष्ट करने वाले राजपत्र की प्रतियां जनता को उपलब्ध करा दी गई थीं, साठ दिन की अवधि के भीतर आक्षेप और सुझाव आमंत्रित किए गए थे;

और, उक्त प्रारूप अधिसूचना को अन्तर्विष्ट करने वाले राजपत्र की प्रतियां जनता को तारीख 3 जुलाई, 2019, को उपलब्ध करा दी गई थी;

और, प्रारुप अधिसूचना के उत्तर में व्यक्तियों और पणधारियों से कोई भी आक्षेप और सुझाव प्राप्त नहीं हुए;

और, प्वाइंट कैलिमर वन्यजीव अभयारण्य (ब्लॉक-ए), तमिलनाडु राज्य के थंजावुर और थिरुवरूर जिलों में स्थित है। अभयारण्य का कुल क्षेत्रफल 118.8591 वर्ग किलोमीटर में थिरुवरूर जिले के थिरुथुराईपोंडी तालुक में 93.0473 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र और थंजावुर जिला के पट्टुकोट्टाई तालुक में 25.8118 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में है;

और, अभयारण्य में प्वाइंट कैलिमर आर्द्रभूमि एकमात्र क्षेत्र है जिसे तमिलनाडु में रामसर स्थल *(19 अगस्त, 2002 को रामसर स्थल सं. 1210 पर)* के रूप में घोषित किया गया था। इस अभयारण्य की मुख्य विशेषता मुल्लीपल्लम लैगून है जो कावेरी नदी, की सहायक नदियों से ताजा जल प्राप्त करता है। इस अभयारण्य के नासुविनियार, पट्टुनाथियार, पमिनियार कोरयार, किलाईथांगी, मारककोरयार, कांथापिरिचन और वलवनार चैनल और पारिस्थितिकी संतुलन के लिए बेहतर तरीके से बेहतर अनुपात में नमक और ताजे जल को रोके रखता है;

और, यह अभयारण्य दुनिया के विभिन्न भागों से आने वाले प्रवासी जल पक्षियों के लिए एक महत्वपूर्ण प्रजनन भूमि है जो वदुवूर और उदयामर्थंडापुरम अभयारण्य के पास में बसेरा हैं और घोंसले बनाते हैं। हर साल यह सितंबर से फरवरी तक 70 से अधिक जल पक्षियों की प्रजातियों को आकर्षित करता है। इसके अलावा, पक्षी अपने मूल स्थानों पर वापस जाने से पहले प्रजनन के लिए प्वाइंट कैलिमर अभयारण्य (ब्लॉक-ए) जाते हैं। प्रवास अवधि के फर्स्ट हाफ में, अर्थात् अक्टूबर से दिसंबर तक छोटे पक्षियों जैसे कि चैती और बत्तख की संख्या अधिक होती है क्योंकि यहां जल की गहराई अधिक होती है। अभयारण्य में दिसंबर से जल की कमी शुरू हो जाती है, बड़े पक्षी जैसे पेंटेड स्टॉर्क, ओपन बिल स्टॉर्क आदि एकत्रित होने लगते हैं;

और, प्वाइंट कैलिमर वन्यजीव अभयारण्य में वनस्पतियों और जीवजन्तुओं की विविधता है। संरक्षित क्षेत्र में पाए जाने वाले वनस्पतियों में मद्रास थॉर्न (*पीथेल्लोबीयम डुलके*), पोर्टिया ट्री (*पोंगामिया पिन्नाटा*), सीपवीड (*सुआडा मोनिइका*), भारतीय सरसप्रीला (*हेमाइड्समस इंडिकस*) शामिल हैं; और जीव-जंतुओं में अन्य शामिल हैं जीव-जंतुओं के उदाहरण ग्रे बगुला (*अर्डे सिनेरिया*), फ्लेमिंगो (*फीनिकोप्टेरस रोज़स*), भारतीय ग्रे नेवला (*हर्पेस्टेस एडवड्र्सी*), ब्रोज बैक्ड ट्री स्नेक (*डेंड्रेलाफिस ट्रिस्टिस*) हैं;

और, प्वाइंट कैलिमर वन्यजीव अभयारण्य में पक्षियों, तितलियों, सरीसृपों, उभयचरों की विविधता है। एरियन जीवजन्तुओं में भारतीय रीफ बगुला (*एग्रेटा गुलारिस*), छोटा रिंगेड प्लोवर (*चराड्रियस डबियस*), स्पून बिल (*प्लाटेला ल्यूकोरोडिया*) आदि शामिल हैं; उभयचर सामान्य भारतीय टोड (*डुट्राफ्रीएनस मेलानोस्टिक्टस*), नैरो माउथ मेंढक (*माइक्रोहिल ओरनेट*), पेंटेड मेंढक (*कलौला टैप्रोबानिका*) आदि हैं।

और, प्वाइंट कैलिमर वन्यजीव अभयारण्य में पाई जाने वाली दुर्लभ और संकटापन्न प्रजातियां ग्रेट कॉर्मोरेंट (*फेलाक्रोकॉरैक्स कार्बो*), पर्पल बगुला (*अर्डेया सिनेरिया*), सामान्य स्निप (गैलिनागो), स्पॉट-बिल्ड पेलिकन (*पेलेकेनस फिलिपेंसिस*), पेंटेड स्ट्रोक (*माइक्टेरिया लीकोसेफेला*) आदि हैं;

और, प्वाइंट कैलिमर वन्यजीव अभयारण्य के चारों ओर के क्षेत्र को, जिसका विस्तार और सीमाएं पारिस्थितिकी पर्यावरणीय से पारिस्थितिकी संवेदी जोन के रूप में पैरा 1 में विनिर्दिष्ट हैं, जैव विविधिता की दृष्टि सुरक्षित और संरक्षित करना और उक्त पारिस्थितिकी संवेदी जोन में उद्योगों या उद्योगों के वर्गों के प्रचालन और प्रसंस्करण करने को प्रतिषिद्ध करना आवश्यक है;

अतः, अब, केन्द्रीय सरकार, पर्यावरण (संरक्षण) नियम, 1986 के नियम 5 के उपनियम (3) के साथ पठित पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 (1986 का 29) (जिसे इस अधिसूचना में इसके पश्चात पर्यावरण अधिनियम कहा गया है) की धारा 3 की उपधारा और (1) उपधारा (2) के खंड (v) और खंड (xiv) तथा धारा 3 की उपधारा (3) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, तमिलनाडु राज्य के थंजावुर और थिरुवरूर जिला में प्वाइंट कैलिमर वन्यजीव अभयारण्य की सीमा के चारों ओर शून्य किलोमीटर से 0.50 किलोमीटर तक विस्तारित क्षेत्र को पारिस्थितिकी संवेदी जोन (जिसे इसमें इसके पश्चात् पारिस्थितिकी संवेदी जोन कहा गया है), के रूप में अधिसूचित करती है, जिसके विवरण निम्नानुसार है, अर्थात् :-

1. **पारिस्थितिकी संवेदी जोन का विस्तार और उसकी सीमाएं.**-(1) पारिस्थितिकी संवेदी जोन का विस्तार प्वाइंट कैलिमर वन्यजीव अभयारण्य की सीमा के चारों ओर शून्य किलोमीटर से 0.50 किलोमीटर तक विस्तृत है

और पारिस्थितिकी संवेदी जोन का क्षेत्रफल 37.492 वर्ग किलोमीटर है। (अभयारण्य के दक्षिणी भाग में विद्यमान बंगाल की खाड़ी के कारण शून्य विस्तार है।)

(2) प्वाइंट कैलिमर वन्यजीव अभयारण्य और इसके पारिस्थितिकी संवेदी जोन की सीमा का विवरण **उपाबंध-I** के रुप में संलग्न है।

(3) सीमा विवरण और अक्षांश और देशांतर के साथ पारिस्थितिकी संवेदी जोन के सीमांकन प्वाइंट कैलिमर वन्यजीव अभयारण्य के मानचित्र **उपाबंध–IIक, उपाबंध–IIख, उपाबंध–IIग, उपाबंध–IIघ** और **उपाबंध–IIङ** के रुप में संलग्न है।

(4) पारिस्थितिकी संवेदी जोन और प्वाइंट कैलिमर वन्यजीव अभयारण्य की सीमा के भू निर्देशांकों की सूची **उपाबंध-III** के सारणी **क** और सारणी **ख** में दी गई है।

(5) मुख्य बिंदुओं के भू-निर्देशांकों के साथ पारिस्थितिकी संवेदी जोन के अंतर्गत आने वाले ग्रामों की सूची **उपाबंध-IV** के रूप में संलग्न है।

2. पारिस्थितिकी संवेदी जोन के लिए आंचलिक महायोजना– (1) राज्य सरकार, पारिस्थितिकी संवेदी जोन के प्रयोजनों के लिए राजपत्र में इस अधिसूचना के प्रकाशन की तारीख से दो वर्ष की अवधि के भीतर, स्थानीय व्यक्तियों के परामर्श से और राज्य के सक्षम प्राधिकारी के अनुमोदन के लिए इस अधिसूचना में दिए गए अनुबंधों का पालन करते हुए आंचलिक महायोजना तैयार करेगी।

(2) राज्य सरकार द्वारा पारिस्थितिकी संवेदी जोन के लिए आचंलिक महायोजना ऐसी रीति से जो इस अधिसूचना में विनिर्दिष्ट किए गए हैं के अनुसार तथा सुसंगत केंद्रीय और राज्य विधियों के अनुरुप और केंद्रीय सरकार द्वारा जारी मार्गनिर्देशों, यदि कोई हों, द्वारा तैयार होगी ।

(3) आंचलिक महायोजना, उक्त योजना में पारिस्थितिकी और पर्यावरणीय बातों को समाकलित करने के लिए राज्य सरकार के निम्नलिखित विभागों के परामर्श से तैयार होगी.-

(i) पर्यावरण;

(ii) वन और वन्यजीव;

(iii) कृषि;

(iv) राजस्व;

(v) शहरी विकास;

(vi) पर्यटन;

(vii) ग्रामीण विकास;

(viii) सिंचाई और बाढ़ नियंत्रण;

(ix) नगरपालिका;

(x) पंचायती राज; और

(xi) लोक निर्माण विभाग;

(4) आंचलिक महायोजना अनुमोदित विद्यमान भू-उपयोग, अवसंरचना और क्रियाकलापों पर कोई निर्बंधन अधिरोपित नहीं करेगी जब तक कि इस अधिसूचना में इस प्रकार विनिर्दिष्ट न हो और आचंलिक महायोजना सभी अवसंरचना और क्रियाकलापों में, जो अधिक दक्षता और पारिस्थितिकी अनुकूल हों, का संवर्धन करेगी ।

(5) आंचलिक महायोजना में अनाच्छादित क्षेत्रों के जीर्णोद्धार, विद्यमान जल निकायों के संरक्षण, आवाह क्षेत्रों के प्रबंधन, जल-संभरों के प्रबंधन, भूतल जल के प्रबंधन, मृदा और नमी संरक्षण, स्थानीय समुदायों की आवश्यकताओं तथा पारिस्थितिकी और पर्यावरण से संबंधित ऐसे अन्य पहलुओं, जिन पर ध्यान देना आवश्यक है, के लिए उपबंध होंगे ।

(6) आंचलिक महायोजना विद्यमान और प्रस्तावित भूमि उपयोग विशेषताओं के ब्यौरों से अनुसमर्थित मानचित्र के साथ सभी विद्यमान पूजा स्थलों, ग्रामों और नगरीय बस्तियों, वनों के प्रकार और किस्मों, कृषि क्षेत्रों, ऊपजाऊ भूमि, हरित क्षेत्र जैसे उद्यान और उसी प्रकार के स्थान, उद्यान कृषि क्षेत्र, फलोउद्यान, झीलों और अन्य जल निकायों का अभ्यकंन करेगी।

(7) आंचलिक महायोजना पारिस्थितिकी संवेदी जोन में विकास को विनियमित करेगी और सारणी में सूचीबद्ध पैराग्राफ-4 में प्रतिषिद्ध और विनियमित क्रियाकलापों का अनुपालन करेगी और स्थानीय समुदायों की जीविका को सुरक्षित करने के लिए पारिस्थितिकी अनुकूल विकास को सुनिश्चित और उसकी अभिवृद्धि भी करेगी।

(8) आंचलिक महायोजना प्रादेशिक विकास योजना की सह विस्तारी होगी ।

(9) इस प्रकार अनुमोदित आंचलिक महायोजना इस अधिसूचना के उपबंधों के अनुसार मानीटरी के अपने कार्यों को करने के लिए मानीटर समिति के लिए एक संदर्भ दस्तावेज तैयार करेगी ।

3. **राज्य सरकार द्वारा किए जाने वाले उपाय.-** राज्य सरकार इस अधिसूचना के उपबंधों को प्रभावी करने के लिए निम्नलिखित उपाय करेगी, अर्थात्:-

(1) **भू-उपयोग.–** (क) पारिस्थितिकी संवेदी जोन में वनों, उद्यान कृषि क्षेत्रों, कृषि क्षेत्रों, मनोरंजन के प्रयोजनों के लिए चिन्हित किए गए पार्कों और खुले स्थानों का वाणिज्यिक या आवासीय या औद्योगिक संबद्ध विकास क्रियाकलापों के लिए उपयोग या संपरिवर्तन नहीं होगा:

परंतु यह कि पारिस्थितिकी संवेदी जोन के भीतर भाग (क) में विनिर्दिष्ट प्रयोजनों से भिन्न प्रयोजन के लिए कृषि और अन्य भूमि का संपरिवर्तन मानीटरी समिति की सिफारिश पर और यथा लागू और क्षेत्रीय नगर योजना अधिनियम और केन्द्रीय सरकार या राज्य सरकार के अन्य नियमों तथा विनियमों के अधीन सक्षम प्राधिकारी के पूर्व अनुमोदन से, और इस अधिसूचना के उपबंधों द्वारा स्थानीय निवासियों की निम्नलिखित आवासीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अनुज्ञात किया जाएगा, जैसे:-

(i) विद्यमान सड़कों को चौड़ा करना और उन्हें सुदृढ़ करना तथा नई सड़कों का संनिर्माण;

(ii) बुनियादी ढांचों और नागरिक सुविधाओं का संनिर्माण और नवीकरण;

(iii) प्रदूषण उत्पन्न न करने वाले लघु उद्योग;

(iv) कुटीर उद्योगों जिनके अंतर्गत ग्रामीण उद्योग भी हैं; सुविधाजनक भण्डार और स्थानीय सुविधाएं सहायक पारिस्थितिकी पर्यटन जिसके अन्तर्गत ग्रह वास सम्मिलित है; और

(v) पैरा 4 के अधीन दिए गए संवर्धित क्रियाकलाप:

परंतु यह और कि क्षेत्रीय नगर योजना अधिनियम और राज्य सरकार के अन्य नियमों और विनियमों के अधीन सक्षम प्राधिकारी के पूर्व अनुमोदन और संविधान के अनुच्छेद 244 के उपबंधों या तत्समय प्रवृत्त विधि के उपबंधों के अनुपालन के बिना, जिसके अन्तर्गत अनुसूचित जनजाति और अन्य परंपरागत वन निवासी (वन अधिकारों की मान्यता) अधिनियम, 2006 (2007 का 2) भी है, वाणिज्यिक या औद्योगिक विकास क्रियाकलापों के लिए जनजातीय भूमि का उपयोग अनुज्ञात नहीं होगा:

परंतु यह और भी कि पारिस्थितिकी संवेदी जोन के भीतर भू-अभिलेखों में उपसंजात कोई गलती, मानीटरी समिति के विचार प्राप्त करने के पश्चात् राज्य सरकार द्वारा प्रत्येक मामले में एक बार ठीक होगी और उक्त गलती के सुधार की सूचना केंद्रीय सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय को दी जाएगी:

परंतु यह और भी कि गलती के संशोधन में इस उप पैरा के अधीन यथा उपबंधित के सिवाय किसी भी दशा में भू-उपयोग का परिवर्तन सम्मिलित नहीं होगा;

(ख) वनीकरण तथा वास जीर्णोद्धार क्रियाकलापों सहित अनप्रयुक्त या अनुत्पादक कृषि क्षेत्रों में पुन: वनीकरण करने के प्रयास किए जाएंगे।

(2) **प्राकृतिक जल स्रोतों.**- आचंलिक महायोजना में सभी प्राकृतिक जल स्रोतों/नदियों/ जलमार्गों के आवाह क्षेत्रों की पहचान की जाएगी और उनके संरक्षण और नवीकरण के लिए योजना सम्मिलित होगी और राज्य सरकार द्वारा ऐसे क्षेत्रों पर या उनके निकट विकास क्रियाकलाप प्रतिषिद्ध करने के बारे में जो ऐसे क्षेत्रों के लिए अहितकर हो ऐसी रीति से मार्गदर्शक सिद्धांत तैयार किए जाएंगे ।

(3) **पर्यटन या पारिस्थितिकी पर्यटन.-** (क) पारिस्थितिकी संवेदी जोन के भीतर सभी नए पारिस्थितिकी पर्यटन क्रियाकलाप या विद्यमान पर्यटन क्रियाकलापों का विस्तार पर्यटन महायोजना के अनुसार पारिस्थितिकी संवेदी जोन के लिए होगा।

(ख) पारिस्थितिकी पर्यटन महायोजना राज्य पर्यटन विभाग द्वारा राज्य पर्यावरण और वन विभाग के परामर्श से तैयार होगी।

(ग) पर्यटन महायोजना आंचलिक महायोजना के एक घटक के रूप में होगी।

(घ) पर्यटन महायोजना पारिस्थितिकी संवेदी जोन की वहन क्षमता के आधार पर तैयार की जाएगी।

(ङ) पारिस्थितिकी पर्यटन संबंधी क्रियाकलाप निम्नानुसार विनियमित होंगे:-

(i) *वन्यजीव अभयारण्य* की सीमा से एक किलोमीटर के भीतर या पारिस्थितिकी संवेदी जोन के विस्तार तक, इनमें जो भी निकट है, नये वाणिज्यिक होटल और रिजॉर्ट के सन्निर्माण अनुज्ञात नहीं होंगे:

परंतु, यह कि *वन्यजीव अभयारण्य* की सीमा से एक किलोमीटर की दूरी से परे पारिस्थितिकी संवेदी जोन के विस्तार तक होटलों और रिजॉर्ट का स्थापना केवल पूर्व परिभाषित और नामनिर्दिष्ट क्षेत्रों में पर्यटन महायोजना के अनुसार पारिस्थितिकी पर्यटन सुविधाओं के लिए ही अनुज्ञात होगा;

(ii) पारिस्थितिकी संवेदी जोन के भीतर नए पर्यटन क्रियाकलापों या विद्यमान पर्यटन

क्रियाकलापों का विस्तार केंद्रीय सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के मार्गदर्शक सिद्धांतों के द्वारा तथा राष्ट्रीय व्याघ्र संरक्षण प्राधिकरण, द्वारा जारी पारिस्थितिकी–पर्यटन, पारिस्थितिकी-शिक्षा और पारिस्थितिकी-विकास पर बल देते हुए (समय-समय पर यथा संशोधित) जारी मार्गदर्शक सिद्धांतों के अनुसार होगा;

(iii) आंचलिक महायोजना का अनुमोदन किए जाने तक, पर्यटन के लिए विकास और विद्यमान पर्यटन क्रियाकलापों के विस्तार को वास्तविक स्थल विनिर्दिष्ट संवीक्षा और मानीटरी समिति की सिफारिश पर आधारित संबंधित विनियामक प्राधिकरणों द्वारा अनुज्ञात किया जाएगा और पारिस्थितिकी संवेदी जोन के भीतर किसी नये होटल या रिसोर्ट या वाणिज्यिक स्थापन का संनिर्माण अनुज्ञात नहीं किया जायेगा ।

(4) **नैसर्गिक विरासत.-** पारिस्थितिकी संवेदी जोन में महत्वपूर्ण नैसर्गिक विरासत के सभी स्थलों जैसे जीन कोश आरक्षित क्षेत्र, शैल विरचनाएं, जल प्रपातों, झरनों, घाटी मार्गों, उपवनों, गुफाएं, स्थलों, भ्रमण, अश्वरोहण, प्रपातों आदि की पहचान की जाएगी और विरासत संरक्षण योजना आंचलिक महायोजना के भाग के रुप में परिरक्षण और संरक्षण के लिए तैयार की जाएगी ।

(5) **मानव निर्मित विरासत स्थल.-** पारिस्थितिकी संवेदी जोन में भवनों, संरचनाओं, शिल्प-तथ्य, ऐतिहासिक, स्थापत्य, सौंदर्यपूरक और सांस्कृतिक महत्व के क्षेत्रों की और उपक्षेत्रों पहचान और उनके संरक्षण के लिए विरासत योजना आंचलिक महायोजना के भाग के रुप में तैयार की जाएगी।

(6) **ध्वनि प्रदूषण**.- पर्यावरण अधिनियम के अधीन ध्वनि प्रदूषण (विनियमन और नियंत्रण) नियम, 2000 में नियत उपबंधों के अनुसार में पारिस्थितिकी संवेदी जोन में ध्वनि प्रदूषण के नियंत्रण और निवारण का अनुपालन किया जाएगा।

(7) **वायु प्रदूषण.**- पारिस्थितिकी संवेदी जोन में, वायु प्रदूषण के निवारण और नियंत्रण का वायु (प्रदूषण निवारण और नियंत्रण) अधिनियम, 1981 (1981 का 14) और उसके अधीन बनाए गए नियमों के उपबंधों के अनुसार अनुपालन किया जाएगा।

(8) **बहिस्राव का निस्सारण.**- पारिस्थितिकी संवेदी जोन में उपचारित बहिस्राव का निस्सारण, साधारणों मानकों के उपबंधों के अनुसार पर्यावरणीय अधिनियम और उसके अधीन बनाए गए नियमों के अधीन आने वाले पर्यावरणीय प्रदूषण के निस्सारण के लिए साधारण मानकों या राज्य सरकार द्वारा नियत मानकों, जो भी अधिक कठोर हो, के उपबंधों के अनुसार होगा।

(9) **ठोस अपशिष्ट.-** ठोस अपशिष्ट का निपटान और प्रबंधन निम्नानुसार किया जाएगा:-

(क) पारिस्थितिकी संवेदी जोन में ठोस अपशिष्ट का निपटान और प्रबंधन भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की अधिसूचना सं. का.आ. 1357(अ), तारीख 8 अप्रैल, 2016 के तहत प्रकाशित ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के उपबंधों के अनुसार किया जाएगा। अकार्बनिक पदार्थो का निपटान पारिस्थितिकी संवेदी जोन से बाहर चिन्हित किए गए स्थानों पर पर्यावरण-अनुकूल रीति से किया जाएगा।

(ख) पारिस्थितिकी संवेदी जोन में मान्य प्रौद्योगिकियों)ईएसएम (का प्रयोग करते हुए विद्यमान नियमों और विनियमों के अनुरूप ठोस अपशिष्ट का सुरक्षित और पर्यावरण-अनुकूल प्रबंधन अनुज्ञात किया जा सकेगा।

(10) **जैव चिकित्सा अपशिष्ट.**- जैव चिकित्सा अपशिष्ट का प्रबंधन निम्नानुसार किया जाएगा.-

(क) पारिस्थितिकी संवेदी जोन में जैव चिकित्सा अपशिष्ट का निपटान भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की अधिसूचना सं.सा.का.नि 343 (अ), तारीख 28 मार्च, 2016 के द्वारा प्रकाशित जैव चिकित्सा अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के उपबंधों के अनुसार किया जाएगा ।

(ख) पारिस्थितिकी संवदी जोन में मान्य प्रौद्योगिकियों का उपयोग करते हुए विद्यमान नियमों और विनियमों के अनुरूप जैव-चिकित्सा अपशिष्ट का सुरक्षित और पर्यावरण-अनुकूल प्रबंधन अनुज्ञात किया जा सकेगा।

(11) **प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन.-** पारिस्थितिकी संवेदी जोन में प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंध का निपटान भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की समय-समय पर यथासंशोधित अधिसूचना सं.सा.का.नि 340(अ), तारीख 18 मार्च, 2016 द्वारा प्रकाशित प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंध नियम, 2016 के उपबंधों के अनुसार किया जाएगा।

(12) **निर्माण और विध्वंस अपशिष्ट प्रबंधन.-** पारिस्थितिकी संवेदी जोन में संनिर्माण और विध्वंस अपशिष्ट प्रबंधन का निपटान भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की समय-समय पर यथासंशोधित अधिसूचना सं.सां.का.नि 317(अ), तारीख 29 मार्च, 2016 द्वारा प्रकाशित संनिर्माण और विध्वंस प्रबंधन नियम, 2016 के उपबंधों के अनुसार किया जाएगा ।

(13) **ई–अपशिष्ट.-** पारिस्थितिकी संवेदी जोन में ई–अपशिष्ट प्रबंधन का निपटान भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की समय-समय पर यथासंशोधित द्वारा प्रकाशित ई–अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के उपबंधों के अनुसार किया जाएगा।

(14) **यानीय यातायात.-** यातायात की यानीय गतिविधियां आवास के अनुकूल विनियमित होंगी और इस संबंध में आंचलिक महायोजना में विशेष उपबंध सम्मिलित किए जाएंगे और आंचलिक महायोजना के तैयार होने और राज्य सरकार के सक्षम प्राधिकारी द्वारा अनुमोदित होने तक, मानीटरी समिति सुसंगत अधिनियमों और उसके अधीन बनाए गए नियमों और विनियमों के अनुसार यानीय क्रियाकलापों के अनुपालन को मानीटर करेगी ।

(15) **यानीय प्रदूषण.-** लागू विधियों के अनुपालन में वाहन प्रदूषण का निवारण और नियंत्रण किया जाएगा। स्वच्छक ईंधन के उपयोग के लिए प्रयास किए जाएंगे।

(16) **औद्योगिक ईकाइयां.-** (i) राजपत्र में इस अधिसूचना के प्रकाशन पर या उसके पश्चात पारिस्थितिकी संवेदी जोन के भीतर कोई नए प्रदूषित उद्योगों की स्थापना की अनुमति नहीं दी जाएगी।

(ii) केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा फरवरी, 2016 में जारी मार्गदर्शक सिद्धान्तों में उद्योगों के वर्गीकरण के अनुसार, जब तक कि अधिसूचना में इस प्रकार विनिर्दिष्ट न हो; पारिस्थितिकी संवेदी जोन के भीतर केवल गैर-प्रदूषणकारी उद्योगों को अनुज्ञात किया जाएगा और इसके अतिरिक्त, गैर प्रदूषणकारी उद्योगों को बढ़ावा दिया जाएगा।

(17) **पहाड़ी ढलानों को संरक्षण.-** पहाड़ी ढलानों का संरक्षण निम्नानुसार होगा:-

(क) आंचलिक महायोजना पहाड़ी ढलानों पर क्षेत्रों का संकेत होगा जहां किसी भी संनिर्माण की अनुमति नहीं दी जाएगी;

(ख) कटाव के एक उच्च डिग्री के साथ विद्यमान खड़ी पहाड़ी ढलानों या ढलानों पर किसी भी संनिर्माण की अनुमति नहीं दी जाएगी ।

4. पारिस्थितिकी संवेदी जोन में प्रतिषिद्ध और विनियमित किए जाने वाले क्रियाकलापों की सूची.- पारिस्थितिकी संवेदी जोन में सभी क्रियाकलाप पर्यावरण अधिनियम के उपबंधों और उसके अधीन बनाए गए नियमों जिसके अन्तर्गत तटीय विनियमन जोन अधिसूचना, 2011 और पर्यावरणीय समाघात निर्धारण अधिसूचना, 2006 और अन्य लागू विधियों के जिसमें वन (संरक्षण) अधिनियम, 1980 (1980 का 69), भारतीय वन अधिनियम, 1927 (1927 का 16), वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 (1972 का 53) सम्मिलित हैं और किये गये संशोधनों द्वारा शासित होंगे और नीचे दी गई सारणी में विनिर्दिष्ट रीति में विनियमित होंगे, अर्थात् :-

सारणी

क्रम सं. (1)	क्रियाकलाप (2)	वर्णन (3)
	अ. प्रतिषिद्ध क्रियाकलाप	
1.	वाणिज्यिक खनन, पत्थर उत्खनन और अपघर्षण इकाईयां ।	(क) वास्तविक स्थानीय निवासियों की घरेलू आवश्यकताओं जिसमें निजी उपयोग के लिए मकानों के संनिर्माण या मरम्मत के लिए धरती को खोदना और मकान बनाने के लिए देशी टाइल्स या ईंटों का निर्माण करना भी सम्मिलित है, के सिवाय सभी प्रकार के नए और विद्यमान खनन (लघु और वृहत खनिज), पत्थर की खानें और उनको तोड़ने की इकाइयां तत्काल प्रभाव से प्रतिषिद्ध होगी। (ख) खनन प्रचालन, माननीय उच्चतम न्यायालय की रिट याचिका (सिविल) सं. 1995 का 202 टी.एन. गौडाबर्मन थिरुमूलपाद बनाम भारत संघ के मामले में आदेश तारीख 4 अगस्त, 2006 और रिट याचिका (सी) सं. 2012 का 435 गोवा फाउंडेशन बनाम भारत संघ के मामले में तारीख 21 अप्रैल, 2014 के आदेश के अनुसरण में प्रचालित होंगी ।
2.	प्रदूषण (जल, वायु, मृदा, ध्वनि, आदि) उत्पन करने वाले उद्योगों की स्थापना ।	पारिस्थितिकी संवेदी जोन में कोई नया उद्योग लगाने और वर्तमान प्रदूषणकारी उद्योगों का विस्तार करने की अनुज्ञा नहीं होगी: परन्तु यह कि केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा फरवरी, 2016 में जारी मार्ग दर्शक सिद्धान्तों में उद्योगों के वर्गीकरण के अनुसार जब तक कि अधिसूचना में ऐसा विनिर्दिष्ट न हों, पारिस्थितिकी संवेदी जोन के भीतर गैर-प्रदूषणकारी उद्योगों को अनुज्ञात किया जाएगा और इसके अतिरिक्त गैर-प्रदूषणकारी कुटीर उद्यागों को बढ़ावा दिया जाएगा।

3.	बृहत जल विद्युत परियोजना की स्थापना ।	लागू विधियों के अनुसार प्रतिषिद्ध (अन्यथा उपबंधित के सिवाय) होंगे ।
4.	किसी परिसंकटमय पदार्थ का उपयोग या उत्पादन या प्रसंस्करण।	लागू विधियों के अनुसार प्रतिषिद्ध (अन्यथा उपबंधित के सिवाय) होंगे ।
5.	प्राकृतिक जल निकायों या क्षेत्र भूमि में अनुपचारित बहिर्स्राव का निस्सारण ।	लागू विधियों के अनुसार प्रतिषिद्ध (अन्यथा उपबंधित के सिवाय) होंगे ।
6.	नई आरा मिलों की स्थापना।	पारिस्थितिकी संवेदी जोन के भीतर नई और विद्यमान आरा मिलों का विस्तार अनुज्ञात नहीं होगा ।
7.	ईंट भट्टों की स्थापना करना।	लागू विधियों के अनुसार प्रतिषिद्ध (अन्यथा उपबंधित के सिवाय) होंगे ।
	आ. विनियमित क्रियाकलाप	
8.	वाणिज्यिक होटलों और रिसोर्टों का स्थापन ।	पारिस्थितिकी पर्यटन क्रियाकलापों लघु अस्थायी संरचनाओं के सिवाय संरक्षित क्षेत्र की सीमा से एक किलोमीटर के भीतर या पारिस्थितिकी संवेदी जोन के विस्तार तक, इनमें जो भी निकट है, नए वाणिज्यिक होटल और रिसोर्टों को अनुज्ञात नहीं किया जाएगा: परंतु यह कि संरक्षित क्षेत्र की सीमा से एक किलोमीटर के परे या पारिस्थितिकी संवेदी जोन के विस्तार तक इनमें से जो भी निकट हो सभी नए पर्यटन क्रियाकलाप या विद्यमान क्रियाकलाप का विस्तार पर्यटन महायोजना और यथा लागू मार्गदर्शी सिद्धांतों के अनुरुप होगा।
9.	संनिर्माण क्रियाकलाप ।	(क) संरक्षित क्षेत्र की सीमा से एक किलोमीटर के भीतर या पारिस्थितिकी संवेदी जोन के विस्तार तक, इनमें जो भी निकट हो, किसी भी प्रकार के नये वाणिज्यिक संनिर्माण की अनुज्ञा नहीं होगी: परंतु यह कि स्थानीय लोगों को अपनी आवास सम्बन्धी निम्नलिखित आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए, पैरा 3 के उप पैरा (1) में सूचीबद्ध क्रियाकलापों सहित अपने उपयोग के लिए, अपनी भूमि में भवन उप-विधियों के अनुसार, संनिर्माण करने की अनुज्ञा होगी, जैसे:- परंतु यह कि गैर–प्रदूषणकारी लघु उद्योगों से संबंधित संनिर्माण क्रियाकलाप लागू नियमों और विनियमों, यदि कोई हों, के अनुसार सक्षम प्राधिकारी की पूर्व अनुमति से विनियमित किए जाएंगे और वे न्यूनतम होंगे । (ख) एक किलोमीटर क्षेत्र से परे ये आंचलिक महायोजना के अनुसार विनियमित होंगे ।

10.	प्रदूषण उत्पन्न न करने वाले लघु उद्योग ।	फरवरी, 2016 में केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा जारी उद्योगों में वर्गीकरण के अनुसार गैर-प्रदूषणकारी उद्योग और अपरिसंकटमय में, लघु और सेवा उद्योग, कृषि, पुष्प कृषि, उद्यान कृषि या पारिस्थितिकी संवेदी जोन से देशी सामग्री से उत्पादों को उत्पन्न करने वाले कृषि आधारित उद्योग सक्षम प्राधिकारी द्वारा अनुज्ञात होंगे।
11.	वृक्षों की कटाई ।	(क) राज्य सरकार में सक्षम प्राधिकारी की पूर्व अनुमति के बिना वन, सरकारी या राजस्व या निजी भूमि पर या वनों में वृक्षों की कटाई नहीं होगी । (ख) वृक्षों की कटाई संबंधित केंद्रीय या राज्य अधिनियम या उसके अधीन बनाए गए नियमों के उपबंध के अनुसार विनियमित होगे ।
12.	वन उत्पादों या गैर काष्ठ वन उत्पादों का संग्रहण ।	लागू विधियों के अनुसार विनियमित होंगे ।
13.	विद्युत और संचार टावरों का परिनिर्माण और केबलों के बिछाए जाने और अन्य बुनियादी ढांचे ।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होंगे। भूमिगत केबल के बिछाए जाने को बढ़ावा दिया जा सकेगा।
14.	नागरिक सुख सुविधाओं सहित अवसंरचनाएं ।	न्यूनीकरण उपायों को लागू विधियों, नियमों और विनियमनों और उपलब्ध मार्गदर्शक सिद्धांतों के अनुसार किया जाएगा ।
15.	विद्यमान सड़कों को चौड़ा करना और उन्हें सुदृढ़ करना तथा नवीन सड़कों का संनिर्माण ।	न्यूनीकरण उपायों को लागू विधियों, नियमों और विनियमनों तथा उपलब्ध मार्गदर्शक सिद्धांतों के अनुसार किया जाएगा ।
16.	पर्यटन से संबंधित अन्य क्रियाकलाप जैसे गर्म वायु गुब्बारें, हेलीकाप्टर, ड्रोन, माइक्रोलाइटस आदि द्वारा पारिस्थितिकी संवेदी जोन क्षेत्र के ऊपर से उड़ना जैसे क्रियाकलाप करना।	लागू विधियों के अनुसार विनियमित होंगे ।
17.	पहाड़ी ढालों और नदी तटों का संरक्षण ।	लागू विधियों के अनुसार विनियमित होंगे ।
18.	रात्रि में यानिक यातायात का संचलन ।	लागू विधियों के अधीन वाणिज्यिक प्रयोजन के लिए विनियमित।
19.	स्थानीय समुदायों द्वारा चल रही कृषि और बागवानी प्रथाओं के साथ दुग्धशाला, दुग्ध उद्योग, कृषि और मछली पालन ।	स्थानीय लोगों के उपयोग के लिए लागू विधियों के अनुसार अनुज्ञात ।
20.	फर्मों, कंपनियों द्वारा बड़े पैमाने पर वाणिज्यिक पशुओं और कुक्कुट फार्मों का स्थापन।	लागू विधियों के अनुसार विनियमित होंगे ।

21.	प्राकृतिक जल निकायों या सतही क्षेत्र में उपचारित बहिर्स्राव का निस्तारण।	जल निकायों में उपचारित अपशिष्ट जल या बहिर्स्राव के निस्सारण से बचा जाएगा और उपचारित अपशिष्ट जल के पुन:चक्रण और पुन:उपयोग के लिए प्रयास किए जाएंगे। अन्यथा लागू विधियों के अनुसार उपचारित बहिर्स्राव के पुनर्चक्रण/प्रवाह के निर्वहन को विनियमित किया जाएगा।
22.	सतह और भूजल का वाणिज्यिक निष्कर्षण।	लागू विधियों के अनुसार विनियमित होंगे।
23.	खुले कुंआ, बोर कुंआ, आदि कृषि और अन्य उपयोग के लिए।	सम्बद्ध प्राधिकारी द्वारा क्रियाकलापों को विनियमित और मानीटरी सख्ती।
24.	ठोस अपशिष्ट का प्रबन्धन।	लागू विधियों के अनुसार विनियमित होंगे।
25.	विदेशी प्रजातियों को लाना।	लागू विधियों के अनुसार विनियमित होंगे।
26.	पारिस्थितिकी पर्यटन।	लागू विधियों के अनुसार विनियमित होंगे।
27.	पोलिथीन बैगों का उपयोग।	लागू विधियों के अनुसार विनियमित होंगे।
28.	वाणिज्यिक संकेत और होर्डिंग।	लागू विधियों के अनुसार विनियमित होंगे।
	इ. संवर्धित क्रियाकलाप	
29.	वर्षा जल संचयन।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
30.	जैविक खेती।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
31.	सभी गतिविधियों के लिए हरित प्रौद्योगिकी को ग्रहण करना।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
32.	कुटीर उद्योगों जिसके अंतर्गत ग्रामीण कारीगर भी हैं।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
33.	नवीकरणीय ऊर्जा और ईंधन का उपयोग।	बायोगैस, सौर प्रकाश इत्यादि को बढ़ावा दिया जाना है।
34.	कृषि वानिकी।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
35.	पारिस्थितिकी अनुकूल परिवहन का उपयोग।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
36.	कौशल विकास।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
37.	निम्नीकृत भूमि/ वन/वास की बहाली।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
38.	पर्यावरणीय जागरुकता।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
39.	बागान लगाना और जड़ी बूटियों का रोपण।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।

IndiaCode

5. पारिस्थितिकी संवेदी जोन की अधिसूचना की मानीटरी के लिए मानीटरी समिति- केंद्रीय सरकार, पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 की धारा 3 की उपधारा (3) के अधीन इस अधिसूचना के उपबंधों की प्रभावी मानीटरी के लिए मानीटरी समिति का गठन करती है, जो निम्नलिखित से मिलकर बनेगी, अर्थात्:-

क्र.सं.	मानीटरी समिति का संघटक	पदनाम
(i)	जिला कलेक्टर, तिरुवरूर	पदेन अध्यक्ष;
(ii)	राज्य सरकार द्वारा नामनिर्दिष्ट किए जाने वाले वन्यजीव संरक्षण के क्षेत्र में काम करने वाले गैर-सरकारी संगठन का प्रतिनिधि	सदस्य;
(iii)	राज्य सरकार द्वारा नामनिर्दिष्ट जैव विविधता में एक विशेषज्ञ	सदस्य;
(iv)	राजस्व प्रभाग अधिकारी, मन्नारगुडी	सदस्य;
(v)	परियोजना अधिकारी, जिला ग्रामीण विकास एजेंसियां, तिरुवरूर	सदस्य;
(vi)	पारिस्थितिकी और पर्यावरण में एक विशेषज्ञ राज्य सरकार द्वारा नामनिर्दिष्ट किया जाएगा	सदस्य;
(vii)	राज्य लोक निर्माण विभाग का एक प्रतिनिधि	सदस्य;
(viii)	राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड का एक प्रतिनिधि	सदस्य;
(ix)	तहसीलदार, पट्टुकोट्टई	सदस्य;
(x)	जिला वन अधिकारी, तिरुवरूर	सदस्य सचिव।

IndiaCode

6. निर्देश–निबंधन.- (1) मानीटरी समिति इस अधिसूचना के उपबंधों के अनुपालन को मानीटर करेगी।

(2) मानीटरी समिति का कार्यकाल तीन वर्ष तक या राज्य सरकार द्वारा नई समिति के पुन: गठन तक के लिए होगा और तत्पश्चात मानीटरी समिति राज्य सरकार द्वारा गठित की जाएगी।

(3) उन क्रियाकलापों की, जो भारत सरकार के तत्कालीन पर्यावरण और वन मंत्रालय की अधिसूचना संख्यांक का.आ. 1533 (अ), तारीख 14 सितम्बर, 2006 की अनुसूची में सम्मिलित हैं, और जो पारिस्थितिकी संवेदी जोन में आते हैं, सिवाय इसके जो पैरा 4 के अधीन सारणी में यथा विनिर्दिष्ट प्रतिषिद्ध क्रियाकलापों के, मानीटरी समिति द्वारा वास्तविक विनिर्दिष्ट स्थलीय दशाओं के आधार पर संवीक्षा की जाएगी और उक्त अधिसूचना के उपबंधों के अधीन पूर्व पर्यावरण अनापत्ति के लिए केंद्रींय सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय को निर्दिष्ट किया जाएगा।

(4) उन क्रियाकलापों की, जो भारत सरकार के तत्कालीन पर्यावरण और वन मंत्रालय की अधिसूचना संख्यांक का. आ. 1533 (अ) तारीख 14 सितंबर, 2006 की अनुसूची में सम्मिलित नहीं है, और जो पारिस्थितिकी संवेदी जोन में आते हैं, सिवाय इसके पैरा 4 के अधीन सारणी में यथाविनिर्दिष्ट प्रतिषिद्ध क्रियाकलापों के, मानीटरी समिति द्वारा वास्तविक विनिर्दिष्ट स्थलीय दशाओं के आधार पर संवीक्षा की जाएगी और उसे संबंध विनियामक प्राधिकरणों को निर्दिष्ट किया जायेगा।

(5) मानीटरी समिति का सदस्य-सचिव या संबद्ध उपायुक्त ऐसे व्यक्ति के विरूद्ध, जो इस अधिसूचना के किसी उपबंध का उल्लंघन करता है, पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 की धारा 19 के अधीन परिवाद फाइल करने के लिए सक्षम होगा।

(6) मानीटरी समिति मुद्दा दर मुद्दा के आधार पर अपेक्षाओं पर निर्भर रहते हुए संबद्ध विभागों के प्रतिनिधियों या विशेषज्ञों, औद्योगिक संगमों या संबद्ध पणधारियों के प्रतिनिधियों को अपने विचार-विमर्श में सहायता के लिए आमंत्रित कर सकेगी ।

(7) मानीटरी समिति प्रत्येक वर्ष की 31 मार्च तक के अपने क्रियाकलापों की वार्षिक कार्रवाई रिपोर्ट राज्य के मुख्य वन्यजीव वार्डन को उपाबंध V में संलग्न प्रपत्र में उक्त वर्ष के 30 जून तक प्रस्तुत करेगी।

(8) केन्द्रीय सरकार का पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय मानीटरी समिति को अपने कृत्यों के प्रभावी निर्वहन के लिए ऐसे निर्देश दे सकेगा, जो वह ठीक समझे ।

7. इस अधिसूचना के उपबंधों को प्रभाव देने के लिए केंद्रीय सरकार और राज्य सरकार अतिरिक्त उपाय, यदि कोई हों, विनिर्दिष्ट कर सकेंगी।

8. इस अधिसूचना के उपबंध, भारत के माननीय उच्चतम न्यायालय या उच्च न्यायालय या राष्ट्रीय हरित अधिकरण द्वारा पारित कोई आदेश या पारित होने वाले कोई आदेश, यदि कोई हों, के अध्यधीन होंगे ।

[फा.सं. 25/29/2018-ईएसजेड]

डॉ. सतीश चन्द्र गढ़कोटी, वैज्ञानिक 'जी'

IndiaCode

उपाबंध- I

प्वाइंट कैलिमर वन्यजीव अभयारण्य के पारिस्थितिकी संवेदी जोन की सीमा का विवरण

उत्तर	संख्या 168 पलंजुर ग्राम के अन-सर्वेक्षण संख्या 546, 547 और 552 के त्रि-जंक्शन बिंदु से आरंभ होती है, सीमा पलंजुर ग्राम के सर्वेक्षण संख्या 547, 548, 549, 550 और 551 के दक्षिणी भाग के साथ आमतौर पर पूर्व की ओर जाती है और वी. संख्या 165 के सर्वेक्षण संख्या 954, थमरनकोट्टई ग्राम के दक्षिण पश्चिम कोण से मिलती है, जो कि पलंजुर, 186 के पुराने सर्वेक्षण संख्या 529 के द्वि-जंक्शन और टी. मरवाकडु ग्राम, संख्या 71 की सर्वेक्षण क्षेत्र संख्या 116 है और इसके बाद टी. मरवाकडु ग्राम के संख्या 71 के सर्वेक्षण क्षेत्र संख्या 103 के उत्तर पश्चिम कोण से मरवाकडु ग्राम संख्या 71 के सर्वेक्षण क्षेत्र संख्या 111 के पूर्वी भाग के साथ जाती है जो कि उक्त टी. मरवाकडु ग्राम के सर्वेक्षण क्षेत्र संख्या 111, 109 और 103 का त्रि-जंक्शन भी है और इसके बाद उक्त टी.मरवाकडु ग्राम के सर्वेक्षण क्षेत्र संख्या 103 के दक्षिणी भाग, सर्वेक्षण क्षेत्र संख्या 359, 360 और 373 का पश्चिमी भाग, सर्वेक्षण क्षेत्र संख्या 374 का पश्चिमी और दक्षिणी भाग, सर्वेक्षण क्षेत्र संख्या 375, 376, 377, 378, 379, 390, 401, 402, 403, 404, 447, 450, 453, 454, 486, 487 और 490 सभी के दक्षिणी भाग से टी. मरवाकडु ग्राम संख्या 71 के सर्वेक्षण क्षेत्र संख्या 490, टी. मरवाकडु ग्राम, वी. संख्या 75 के सर्वेक्षण संख्या 116 और टी. वडाकडु ग्राम, संख्या 83 के सर्वेक्षण संख्या 317 के त्रि-जंक्शन बिंदु के साथ पूर्व की ओर जाती है और इसके बाद सर्वेक्षण क्षेत्र संख्या 317 के दक्षिणी भाग से टी.वडाकडु ग्राम संख्या 83 के सर्वेक्षण क्षेत्र संख्या 317 के त्रि-जंक्शन, पट्टुकोट्टई तालुक के पुडुकोट्टगम ग्राम संख्या 74 के सर्वेक्षण क्षेत्र संख्या 212 और सर्वेक्षण क्षेत्र संख्या 351 के 135 के साथ पूर्व की ओर जाती है और इसके बाद सर्वेक्षण संख्या 348 की पूर्वी सीमा पूर्व के साथ उत्तर की ओर जाती है और इसके बाद सर्वेक्षण संख्या 347 की पश्चिमी सीमा, मुथुपेट

	ग्राम संख्या 79 के 346 की पूर्वी सीमा के साथ जाती है यह सर्वेक्षण संख्या 346 के दक्षिण पूर्व कोण से संख्या 74, पुदुकोट्टगम ग्राम संख्या 79, मुथुपेट और थुराईकडु ग्राम संख्या 135 के सर्वेक्षण संख्या 347 से मिलती है और इसके बाद बिंदु जाती है जो कि 6 लिंक थिअडलिट से और बेयरिंग 1510 में है। सीमा इसके बाद स्टेशन संख्या 2, 500 लिंकों की दूरी में बिंदु और आरंभिक बिंदु से बेयरिंग 134.5 में जाती है और इसके बाद बेयरिंग और दूरी निम्नलिखित है:

स्टेशन से	स्टेशन तक	चुम्बकीय बेयरिंग	दूरी (लिंकों में)
2	3	90.50	2510
3	4	104.75	1242
4	5	101.75	1834
5	6	91.75	2367
6	7	102.00	1767
7	8	121.75	1767
8	9	110.75	2116
9	10	111.25	4612
10	11	110.00	4268
11	12	95.75	3396
12	13	93.00	300
13	14	93.00	2503
14	15	95.00	2574
15	16	95.75	2905
16	17	105.50	4453
17	18	105.50	3496
18	19	105.50	4761
19	20	195.50	3974
20	21	105.50	3716
21	22	106.00	3055
22	31	134.00	9164

उत्तर पूर्व	सीमा थमरनकोट्टई ग्राम से आरंभ होती है आमतौर पर सर्वेक्षण क्षेत्र संख्या 964, 966, 968 और 968 की दक्षिणी भागों के साथ पूर्व की ओर सर्वेक्षण क्षेत्र संख्या 969 (थमरनकोट्टई ग्राम के सभी) का पश्चिमी और दक्षिणी भागों से सर्वेक्षण क्षेत्र संख्या 969 की दक्षिणी पूर्वी कोण जाती है जो कि थमरनकोट्टई ग्राम के सर्वेक्षण क्षेत्र संख्या 969 का द्वि-जंक्शन भी है।
पूर्व	इसके अतिरिक्त स्टेशन संख्या 31 से 32 तक सीमा बेयरिंग 204.50 में 2260 लिंकों की दूरी के लिए दक्षिण से जाती है यह पलक स्ट्रेट से मिलती है।

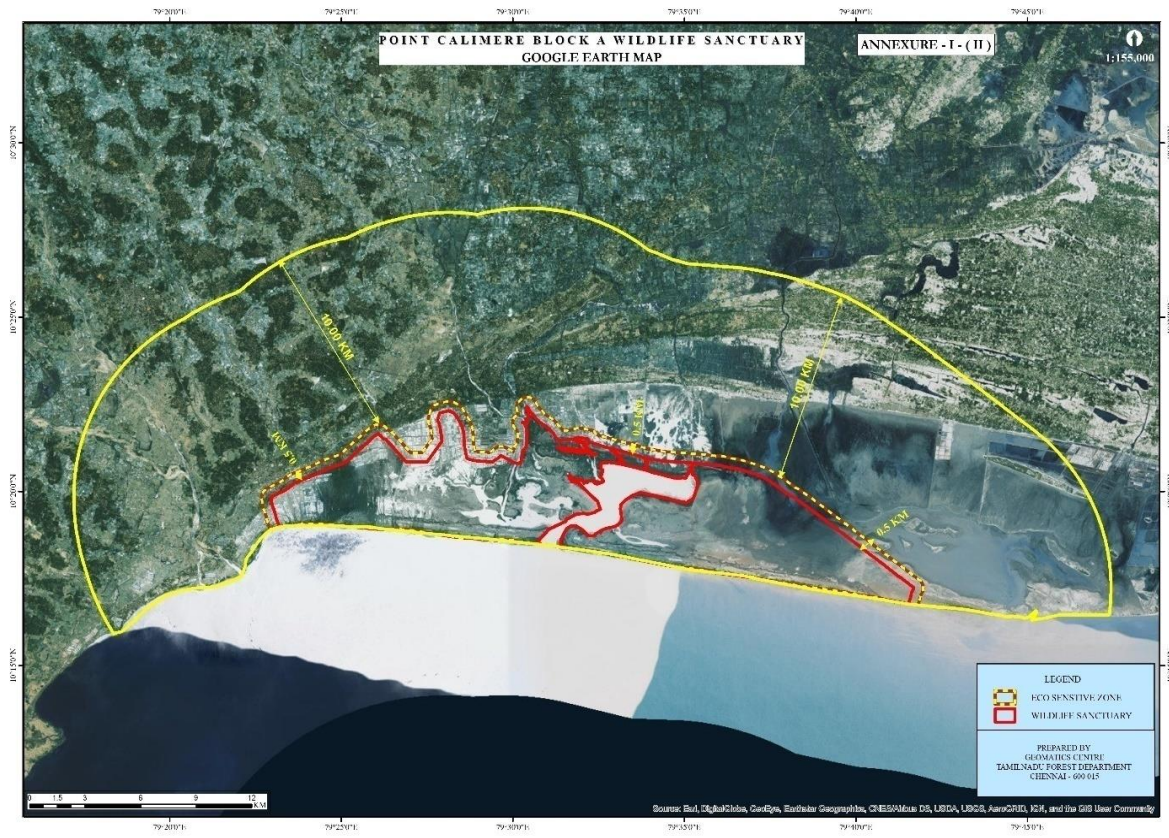
IndiaCode

दक्षिण पूर्व	थिरुथुरईपून्दी तालुक के थुरईकडु ग्राम और इसके बाद सीमा आमतौर पर संख्या 82 के सर्वेक्षण संख्या 478, 479 और 480, तुरईकडु ग्राम की पश्चिमी सीमा के साथ जाती है और इसके बाद सीमा 480, 474, 473, 467, 459, 457, 450, 449, 351, 443, 435, 350, 432, थुरईकडु ग्राम की दक्षिणी सीमा के साथ जाती है।
दक्षिण	सीमा पलक स्ट्रेट के तट के साथ जाती है यह पलंजुर बीट – 2 आर एफ के दक्षिण पश्चिम कोण पहुँचती है जो कि पलक स्ट्रेट का जंक्शन बिंदु और पलंजुर ग्राम का सर्वेक्षण संख्या 556 भी है।
दक्षिण पश्चिम	इसके बाद सीमा पलंजुर ग्राम, आर.एस. संख्या 547,548,569,550 एवं 551 में समाप्त होती है।
पश्चिम	इसके बाद सीमा आमतौर पर पलंजुर ग्राम के सभी सर्वेक्षण संख्या 558, 557 की पश्चिमी सीमा के साथ 366.8 मीटर की दूरी में उत्तर की ओर जाती है और इसके बाद सीमा सर्वेक्षण संख्या 557 के पूर्वी भाग के साथ उत्तर में जाती है और पलंजुर ग्राम के सर्वेक्षण संख्या 557, 529 और 552 के त्रि-जंक्शन बिंदु पहुँचती है। इसके बाद सीमा सर्वेक्षण संख्या 552 के दक्षिणी, पूर्वी और उत्तरी भागों के साथ जाती है यह आरंभिक बिंदु पहुँचती है।
उत्तर पश्चिम	इसके बाद सीमा आमतौर पर पलंजुर ग्राम के सभी सर्वेक्षण संख्या 557 की पश्चिमी सीमा के साथ 366.8 मीटर की दूरी से उत्तर की ओर जाती है।

IndiaCode

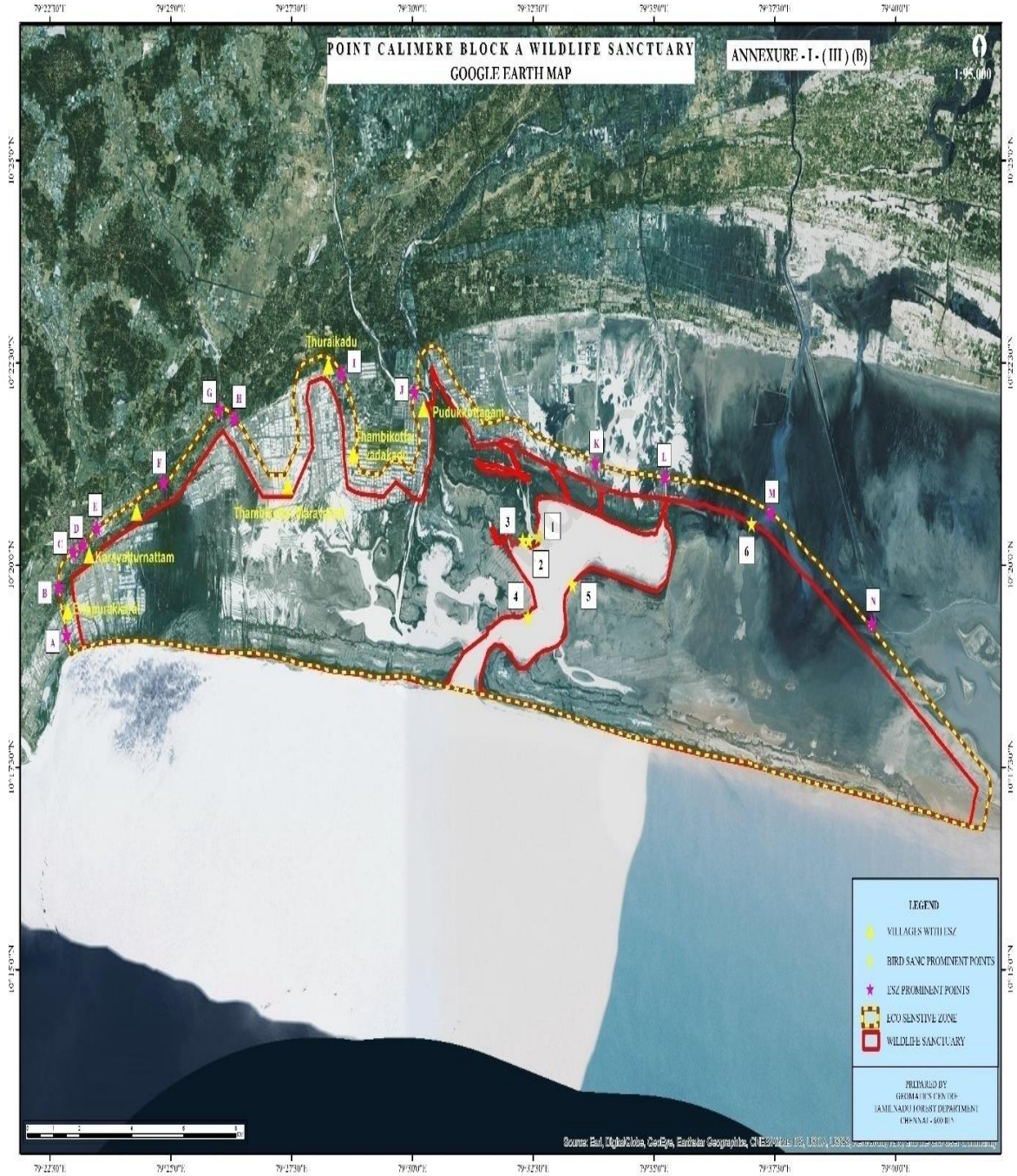
उपाबंध- IIक

प्वाइंट कैलिमर ब्लॉक ए-वन्यजीव अभयारण्य के पारिस्थितिकी संवेदी जोन का गूगल मानचित्र



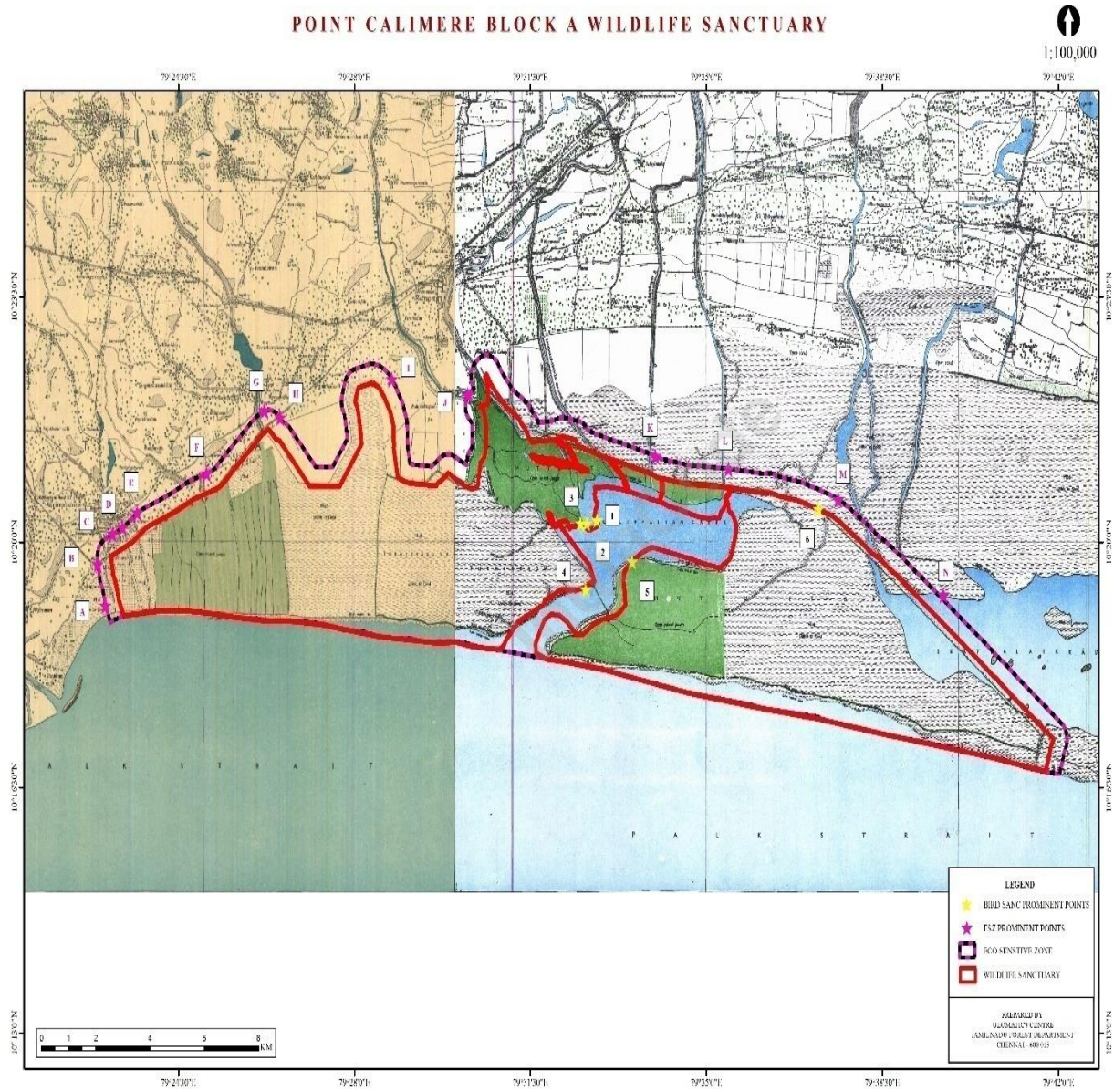
उपाबंध- IIख

मुख्य अवस्थान के भू ए-निर्देशांक बिंदुओं के साथ प्वाइंट कैलिमर ब्लॉक-वन्यजीव अभयारण्य के पारिस्थितिकी संवेदी जोन का गूगल मानचित्र



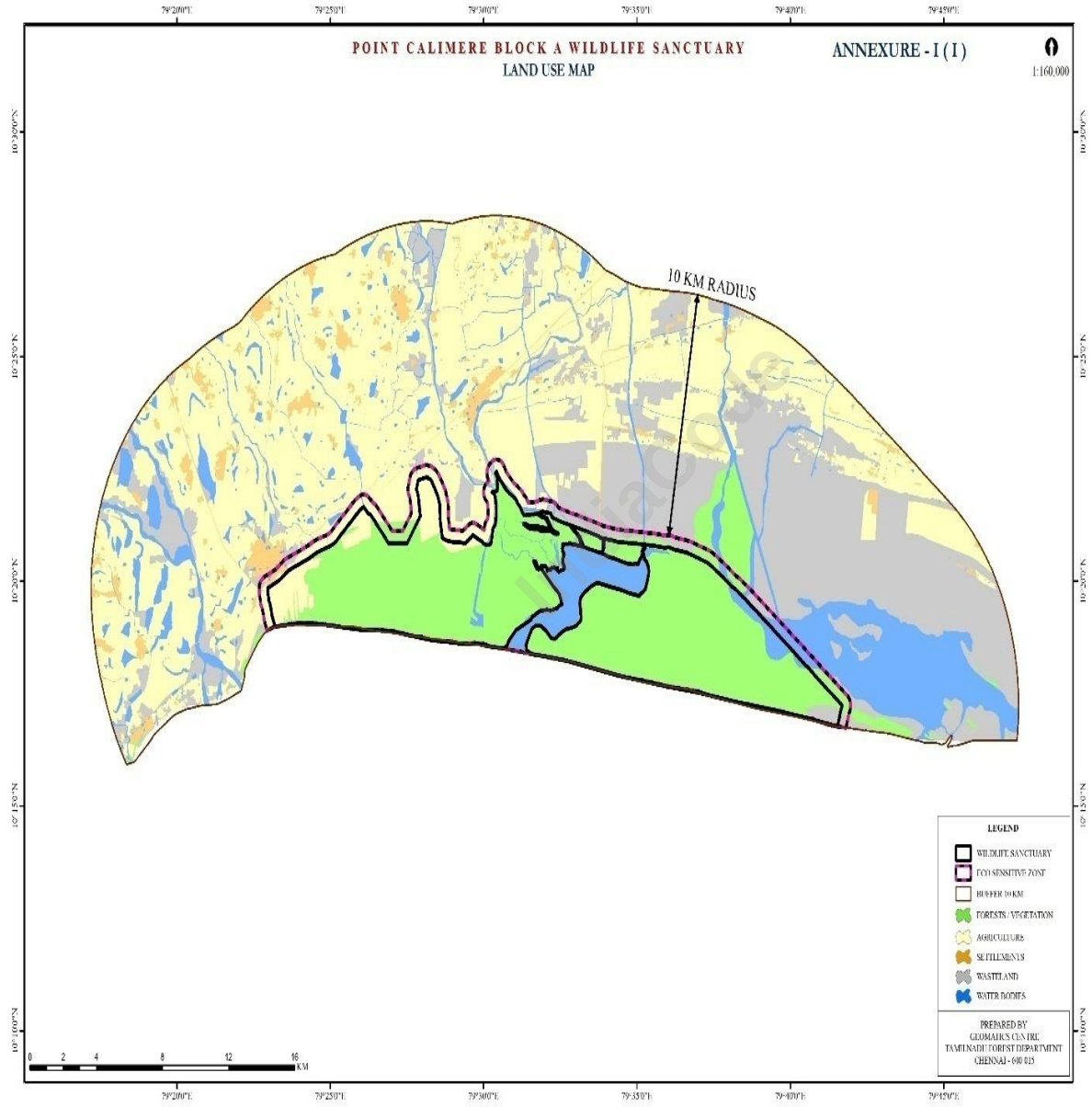
उपाबंध- IIग

भारतीय सर्वेक्षण (एस ओ आई) टोपोशीट पर प्वाइंट कैलिमर ब्लॉक ए-वन्यजीव अभयारण्य के पारिस्थितिकी संवेदी जोन का मानचित्र



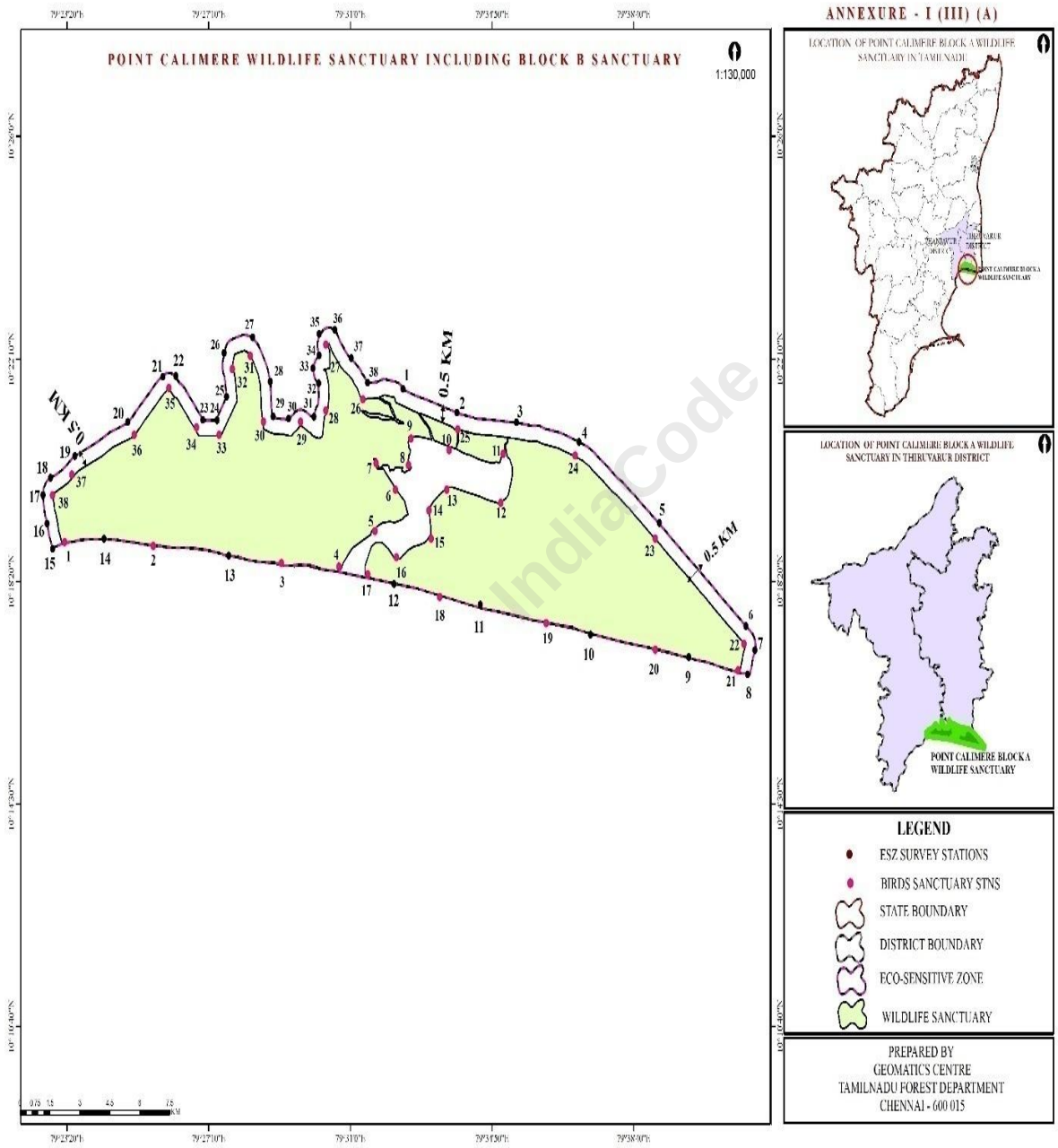
उपाबंध- IIघ

10 किलोमीटर बफर क्षेत्र के साथ प्वाइंट कैलिमर ब्लॉक ए-वन्यजीव अभयारण्य के पारिस्थितिकी संवेदी जोन का भू-उपयोग पैटर्न मानचित्र



उपाबंध- IIङ

मुख्य अवस्थानों के अक्षांश और देशांतर के साथ प्वाइंट कैलिमर ब्लॉक ए-वन्यजीव अभयारण्य के पारिस्थितिकी संवेदी जोन का मानचित्र



उपाबंध-III

सारणी क: प्वाइंट कैलिमर ब्लॉक-ए वन्यजीव अभयारण्य, तमिलनाडु के मुख्य अव स्थानों के अक्षांश-देशांतर

क्र. सं.	मुख्य बिंदुओं के अवस्थान/दिशा	अक्षांश (उ) डी एम एस प्रारुप	देशांतर (पू) डी एम एस प्रारुप
1.	द प	10°20'5"	79°50'46"
2.	द प	10°20'7"	79°51'26"
3.	द	10°20'6"	79°51'53"
4.	द	10°19'34"	79°51'58"
5.	द पू उप्पूथोट्टम बोट जेट्टी	10°19'10"	79°52'0"
6.	द पू	10°18'40"	79°52'3"
7.	द पू वॉच टॉवर और रेस्टिंग शेड	10°18'13"	79°52'4"
8.	द पू न्यू चीफ कोर्नर	10°18'4"	79°52'20"
9.	द पू	10°17'45"	79°52'25"
10.	द पू	10°17'27"	79°52'14"
11.	द पू	10°17'8"	79°51'42"
12.	द पू	10°16'50"	79°51'2"
13.	द पू जेलिमुनई बोट जेट्टी	10°16'38"	79°50'15"
14.	द पू	10°16'40"	79°50'0"
15.	द पू	10°16'57"	79°49'57"
16.	द पू	10°17'10"	79°49'48"
17.	द	10°17'26"	79°50'3"
18.	द	10°17'43"	79°50'6"
19.	द पू	10°17'55"	79°49'51"
20.	द पू	10°18'15"	79°49'56"
21.	पू	10°18'23"	79°49'34"
22.	पू	10°18'34"	79°49'21"
23	उ पू	10°18'39"	79°49'19"
24	उ पू वॉच टॉवर, थोंडीयाक्कडू	10°18'43"	79°49'22"
25.	उ पू	10°18'45"	79°49'39"
26	उ	10°18'47"	79°49'50"
27.	उ	10°18'49"	79°49'52"

indiaCode

28.	उ	10°18'48"	79°49'57"
29.	उ	10°18'50"	79°50'6"
30.	उ	10°18'50"	79°50'9"
31.	उ	10°19'5"	79°50'12"
32.	उ प	10°19'22"	79°50'14"
33.	उ प	10°19'21"	79°50'18"
34.	उ प	10°19'27"	79°50'19"
35.	उ प	10°19'32"	79°50'21"
36.	उ प	10°19'33"	79°50'19"
37.	प	10°19'36"	79°50'17"
38.	प	10°19'45"	79°50'18"

सारणी ख: पारिस्थितिकी संवेदी जोन के मुख्य अवस्थानों के अक्षांश-देशांतर

क्र. सं.	मुख्य बिंदुओं के अवस्थान/दिशा	अक्षांश (उ) डी एम एस प्रारुप	देशांतर (पू) डी एम एस प्रारुप
1.	उ	10°21'40"	79°32'26"
2.	उ	10°21'15"	79°33'53"
3.	उ	10°21'5"	79°35'30"
4.	उ पू	10°20'44"	79°37'12"
5.	उ पू	10°19'21"	79°39'22"
6.	पू	10°17'34"	79°41'42"
7.	पू	10°17'9"	79°41'57"
8.	द पू	10°16'44"	79°41'45"
9.	द पू	10°17'2"	79°40'10"
10.	द पू	10°17'25"	79°37'30"
11.	द पू	10°17'56"	79°34'31"
12.	द	10°18'18"	79°32'11"
13.	द	10°18'47"	79°27'42"
14.	द प	10°19'4"	79°24'20"
15.	द प	10°18'54"	79°22'57"
16.	प	10°19'20"	79°22'48"
17.	प	10°19'49"	79°22'41"
18.	प	10°20'7"	79°22'53"
19.	उ प	10°20'30"	79°23'33"
20.	उ प	10°21'5"	79°24'59"
21.	उ प	10°21'52"	79°25'56"

IndiaCode

22.	उ प	10°21'53"	79°26'17"
23.	उ प	10°21'8"	79°27'1"
24.	उ	10°21'7"	79°27'24"
25.	उ	10°21'31"	79°27'39"
26.	उ	10°22'16"	79°27'35"
27.	उ	10°22'33"	79°28'21"
28.	उ	10°21'47"	79°28'50"
29.	उ	10°21'11"	79°28'54"
30.	उ	10°21'9"	79°29'20"
31.	उ	10°21'11"	79°30'1"
32.	उ	10°21'45"	79°30'9"
33.	उ	10°22'1"	79°29'60"
34.	उ	10°22'14"	79°30'9"
35.	उ	10°22'36"	79°30'9"
36.	उ	10°22'40"	79°30'35"
37.	उ	10°22'11"	79°31'2"
38	उ	10°21'46"	79°31'28"

IndiaCode

उपाबंध-IV

भू-निर्देशांकों के साथ प्वाइंट कैलिमर ब्लॉक-ए वन्यजीव अभयारण्य के पारिस्थितिकी संवेदी जोन के अंतर्गत आने वाले ग्राम क्षेत्र की सूची

क्र.सं.	ग्राम का नाम	ग्राम के प्रकार	तालुक	जिला	अक्षांश (उ) डी एम एस प्रारुप	देशांतर (पू) डी एम एस प्रारुप
1.	एरिप्पुराक्कारई	राजस्व ग्राम	पट्टुक्कोट्टई	थंजावुर	10°19'26"	79°22'52"
2.	थम्बीकोट्टई वडाकाडु	राजस्व ग्राम	थिरुथुरईपून्दी	थिरुवरुर	10°21'22"	79°28'47"
3.	पुडुक्कोट्टागम	राजस्व ग्राम	पट्टुक्कोट्टई	थंजावुर	10°21'56"	79°30'14"
4.	थुराईकाडु	राजस्व ग्राम	थिरुथुरईपून्दी	थिरुवरुर	10°22'28"	79°28'16"
5.	थम्बीकोट्टाई मरवाकाडु	राजस्व ग्राम	थिरुथुरईपून्दी	थिरुवरुर	10°20'59"	79°27'26"
6.	करायाट्टु नट्टाम	राजस्व ग्राम	पट्टुक्कोट्टई	थंजावुर	10°20'7"	79°23'19"

उपाबंध -V

पारिस्थितिक संवेदी जोन मानीटरी समिति - की गई कार्रवाई की रिपोर्ट का प्रपत्र:

1. बैठकों की संख्या और तारीख ।
2. बैठकों का कार्यवृत: (कृपया मुख्य उल्लेखनीय बिंदुओं का उल्लेख करें । बैठक के कार्यवृत्त को एक पृथक उपाबंध में उपाबद्ध करें) ।
3. आंचलिक महायोजना की तैयारी की प्रास्थिति जिसके अंतर्गत पर्यटन महायोजना भी है।
4. भू-अभिलेख में सदृश्य त्रुटियों के सुधार के लिए ब्यौहार किए गए मामलों का सार (पारिस्थितिकी संवेदी जोन वार)। ब्यौरे उपाबंध के रूप में संलग्न किए जाएं।
5. पर्यावरण समाघात निर्धारण अधिसूचना, 2006 के अधीन आने वाले क्रियाकलापों की संवीक्षा के मामलों का सार। (ब्यौरे एक पृथक् उपाबंध के रूप में संलग्न किए जाएं)।
6. पर्यावरण समाघात निर्धारण अधिसूचना, 2006 के अधीन न आने वाली क्रियाकलापों की संवीक्षा के मामलों का सार । (ब्यौरे एक पृथक् उपाबंध के रूप में संलग्न किए जाएं)।
7. पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 की धारा 19 के अधीन दर्ज की गई शिकायतों का सार ।
8. कोई अन्य महत्वपूर्ण मामला ।

IndiaCode

MINISTRY OF ENVIRONMENT, FOREST AND CLIMATE CHANGE

NOTIFICATION

New Delhi, the 23rd January, 2020

S.O. 411(E).— WHEREAS, a draft notification was published in the Gazette of India, Extraordinary, *vide* notification of the Government of India in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change number S.O. 2321(E), dated the 3rd July, 2019, inviting objections and suggestions from all persons likely to be affected thereby within the period of sixty days from the date on which copies of the Gazette containing the said notification were made available to the public;

AND WHEREAS, copies of the Gazette containing the said draft notification were made available to the public on the 3rd July, 2019;

AND WHEREAS, no objections and suggestions were received from persons and stakeholders in response to the draft notification;

WHEREAS, the Point Calimere Wildlife Sanctuary (Block – A) is located in Thanjavur and Thiruvarur districts in the State of Tamil Nadu. The total area of the Sanctuary is 118.8591 square kilometre comprising of 93.0473 square kilometre in Thiruthuraipoondi taluk of Thiruvarur district and 25.8118 square kilometre in Pattukottaitaluk of Thanjavur district;

AND WHEREAS, the Point Calimere Wetland in the Sanctuary is the only area in Tamil Nadu which was declared as Ramsar site (*Ramsar site No. 1210 on August 19th of 2002*). The salient feature of this Sanctuary is Mullipallam lagoon which receives fresh water from the tributaries of Cauvery river. The Nasuviniyar, Pattuvanathiyar, Paminiyar Korayar, Kilaithangi, Marakakorayar, Kanthapirichan and Valavanar channel retains salt and freshwater proportionately for the ecological balance of this Sanctuary;

AND WHEREAS, the Sanctuary is an important feeding ground for migratory water birds that come from different parts of the world which also roost and nest in nearby Vaduvur and Udayamarthandapuram Sanctuary. More than seventy species of water birds are recorded during the months of September to February each year. Further, these birds visits the Point Calimere Sanctuary (Block – A), particularly for feeding before

return to their home. In early period of migration i.e. October to December, the population of smaller birds like teals and ducks was high as water depth is more. As water starts receding from December onwards, larger birds like painted storks, open bills storks, etc., are congregating in the Sanctuary;

AND WHEREAS, the Sanctuary has diversity of flora and fauna. The flora found in the protected area inter alia includes Madras thorn (*Pithecellobium dulce*), portia tree (*Pongamia pinnata*), seepweed (*Suaeda monoica*), Indian sarsaparilla (*Hemidesmus indicus*) etc; and the fauna inter alia includes examples of fauna are grey heron (*Ardea cinerea*), flamingo (*Phoenicopterus roseus*), Indian grey mongoose (*Herpestes edwardsii*), bronzeback tree snake (*Dendrelaphis tristis*), etc.;

AND WHEREAS, the Point Calimere Wildlife Sanctuary has variety of birds, butterflies, reptiles, amphibians. The avian fauna inter alia includes Indian reef heron (*Egretta gularis*), little ringed plover (*Charadrius dubius*), spoon bill (*Platalea leucorodia*) etc; while major amphibians of the Sanctuary includes common Indian toad (*Duttaphrynus melanostictus*), narrow mouthed frog (*Microhyla ornate*), painted frog (*Kaloula taprobanica*) etc.;

AND WHEREAS, the rare and threatened species found in the Point Calimere Wildlife Sanctuary are great cormorant (*Phalacrocorax carbo*), purple heron (*Ardea cinerea*), common snipe (*Gallinago*), spot-billed pelican (*Pelecanus philippensis*), painted strok (*Mycteria leucocephala*), etc.;

AND WHEREAS, it is necessary to conserve and protect the area, the extent and boundaries of Point Calimere Wildlife Sanctuary which are specified in paragraph 1 as Eco-sensitive Zone from ecological, environmental and biodiversity point of view and to prohibit industries or class of industries and their operations and processes in the said Eco-sensitive Zone;

NOW, THEREFORE, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) and clauses (v) and (xiv) of sub-section (2) and sub-section (3) of section 3 of the Environment (Protection) Act 1986 (29 of 1986) (hereafter in this notification referred to as the Environment Act) read with sub-rule (3) of rule 5 of the Environment (Protection) Rules, 1986, the Central Government hereby notifies an area to an extent varying from zero kilometre to 0.50 kilometre around the boundary of Point Calimere Wildlife Sanctuary in Thanjavur and Thiruvarur districts in the State of Tamil Nadu as the Eco-sensitive Zone (hereafter in this notification referred to as the Eco-sensitive Zone) details of which are as under, namely: -

1. Extent and boundaries of Eco-sensitive Zone. – (1) The Eco-sensitive Zone shall be to an extent of zero kilometre to 0.50 kilometre around the boundary of Point Calimere Wildlife Sanctuary and the area of the Eco-sensitive Zone is 37.492 square kilometres. (*Zero extent is due to presence of Bay of Bengal at the southern side of the Sanctuary*).

(2) The boundary description of the Point Calimere Wildlife Sanctuary and its Eco-sensitive Zone is appended in **Annexure-I.**

(3) The maps of the Point Calimere Wildlife Sanctuary demarcating Eco-sensitive Zone along with boundary details and latitudes and longitudes are appended as **Annexure-IIA, Annexure-IIB, Annexure-IIC, Annexure-IID** and **Annexure-IIE.**

(4) List of geo-coordinates of the boundary of the Point Calimere Wildlife Sanctuary and Eco-sensitive Zone are given in Table **A** and Table **B** of **Annexure III.**

(5) The list of villages falling in the proposed Eco-sensitive Zone along with their geo co-ordinates at prominent points is appended as **Annexure-IV.**

2. Zonal Master Plan for Eco-sensitive Zone.- (1) The State Government shall, for the purposes of the Eco-sensitive Zone prepare a Zonal Master Plan within a period of two years from the date of publication of this notification in the Official Gazette, in consultation with local people and adhering to the stipulations given in this notification for approval of the Competent authority of State.

(2) The Zonal Master Plan for the Eco-sensitive Zone shall be prepared by the State Government in such manner as is specified in this notification and also in consonance with the relevant Central and State laws and the guidelines issued by the Central Government, if any.

(3) The Zonal Master Plan shall be prepared in consultation with the following Departments of the State Government, for integrating the ecological and environmental considerations into the said plan:-

(i) Environment,

(ii) Forest and Wildlife,

(iii) Agriculture,

(iv) Revenue,

(v) Urban Development,

(vi) Tourism,

(vii) Rural Development,

(viii) Irrigation and Flood Control,

(ix) Municipal,

(x) Panchayati Raj, and

(xi) Public Works Department.

(4) The Zonal Master Plan shall not impose any restriction on the approved existing land use, infrastructure and activities, unless so specified in this notification and the Zonal Master Plan shall factor in improvement of all infrastructure and activities to be more efficient and eco-friendly.

(5) The Zonal Master Plan shall provide for restoration of denuded areas, conservation of existing water bodies, management of catchment areas, watershed management, groundwater management, soil and moisture conservation, needs of local community and such other aspects of the ecology and environment that need attention.

(6) The Zonal Master Plan shall demarcate all the existing worshipping places, villages and urban settlements, types and kinds of forests, agricultural areas, fertile lands, green area, such as, parks and like places, horticultural areas, orchards, lakes and other water bodies with supporting maps giving details of existing and proposed land use features.

(7) The Zonal Master Plan shall regulate development in Eco-sensitive Zone and adhere to prohibited and regulated activities listed in the Table in paragraph 4 and also ensure and promote eco-friendly development for security of local communities' livelihood.

(8) The Zonal Master Plan shall be co-terminus with the Regional Development Plan.

(9) The Zonal Master Plan so approved shall be the reference document for the Monitoring Committee for carrying out its functions of monitoring in accordance with the provisions of this notification.

3. Measures to be taken by the State Government.- The State Government shall take the following measures for giving effect to the provisions of this notification, namely:-

(1) Land use.– (a) Forests, horticulture areas, agricultural areas, parks and open spaces earmarked for recreational purposes in the Eco-sensitive Zone shall not be used or converted into areas for commercial or residential or industrial activities:

Provided that the conversion of agricultural and other lands, for the purposes other than that specified at part (a) above, within the Eco-sensitive Zone may be permitted on the recommendation of the Monitoring Committee, and with the prior approval of the competent authority under Regional Town Planning Act and other rules and regulations of Central Government or State Government as applicable and *vide* provisions of this Notification, to meet the residential needs of the local residents and for activities such as:-

(i) widening and strengthening of existing roads and construction of new roads;

(ii) construction and renovation of infrastructure and civic amenities;

(iii) small scale industries not causing pollution;

(iv) cottage industries including village industries; convenience stores and local amenities supporting eco-tourism including home stay; and

(v) promoted activities given under paragraph 4:

Provided further that no use of tribal land shall be permitted for commercial and industrial development activities without the prior approval of the competent authority under Regional Town Planning Act and other rules and regulations of the State Government and without compliance of the provisions of Article 244 of the Constitution or the law for the time being in force, including the Scheduled Tribes and Other Traditional Forest Dwellers (Recognition of Forest Rights) Act, 2006 (2 of 2007):

Provided also that any error appearing in the land records within the Eco-sensitive Zone shall be corrected by the State Government, after obtaining the views of Monitoring Committee, once in each case and the correction of said error shall be intimated to the Central Government in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change:

Provided also that the correction of error shall not include change of land use in any case except as provided under this sub-paragraph.

(b) Efforts shall be made to reforest the unused or unproductive agricultural areas with afforestation and habitat restoration activities.

(2) Natural water bodies.-The catchment areas of all natural springs shall be identified and plans for their conservation and rejuvenation shall be incorporated in the Zonal Master Plan and the guidelines shall be drawn up by the State Government in such a manner as to prohibit development activities at or near these areas which are detrimental to such areas.

(3) Tourism or Eco-tourism.- (a) All new eco-tourism activities or expansion of existing tourism activities within the Eco-sensitive Zone shall be as per the Tourism Master Plan for the Eco-sensitive Zone.

(b) The Eco-Tourism Master Plan shall be prepared by the State Department of Tourism in consultation with State Departments of Environment and Forests.

(c) The Tourism Master Plan shall form a component of the Zonal Master Plan.

(d) The Tourism Master Plan shall be drawn based on the study of carrying capacity of the Eco-Sensitive Zone;

(e) The activities of eco-tourism shall be regulated as under, namely:-

(i) new construction of hotels and resorts shall not be allowed within one kilometre from the boundary of the Wildlife Sanctuary or upto the extent of the Eco-Sensitive Zone whichever is nearer:

Provided that beyond the distance of one kilometre from the boundary of the Wildlife Sanctuary till the extent of the Eco-Sensitive Zone, the establishment of new hotels and resorts shall be allowed only in pre-defined and designated areas for eco-tourism facilities as per Tourism Master Plan;

(ii) all new tourism activities or expansion of existing tourism activities within the Eco-Sensitive Zone shall be in accordance with the guidelines issued by the Central Government in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change and the eco-tourism guidelines issued by National Tiger Conservation Authority (as amended from time to time) with emphasis on eco-tourism; eco-education and eco-development and based on the study of carrying capacity of the Eco-Sensitive Zone;

(iii) until the Zonal Master Plan is approved, development for tourism and expansion of existing tourism activities shall be permitted by the concerned regulatory authorities based on the actual site specific scrutiny and recommendation of the Monitoring Committee and no new hotel, resort or commercial establishment construction shall be permitted within Eco-sensitive Zone area.

(4) Natural heritage.- All sites of valuable natural heritage in the Eco-sensitive Zone, such as the gene pool reserve areas, rock formations, waterfalls, springs, gorges, groves, caves, points, walks, rides, cliffs, etc. shall be identified and a heritage conservation plan shall be drawn up for their preservation and conservation as a part of the Zonal Master Plan.

(5) Man-made heritage sites.- Buildings, structures, artefacts, areas and precincts of historical, architectural, aesthetic, and cultural significance shall be identified in the Eco-sensitive Zone and heritage conservation plan for their conservation shall be prepared as part of the Zonal Master Plan.

(6) Noise pollution. - Prevention and control of noise pollution in the Eco-sensitive Zone shall be complied with the provisions of the Noise Pollution (Regulation and Control) Rules, 2000 under the Environment Act.

(7) Air pollution.- Prevention and control of air pollution in the Eco-sensitive Zone shall be carried out in accordance with the provisions of the Air (Prevention and Control of Pollution) Act, 1981 (14 of 1981) and the rules made thereunder.

IndiaCode

(8) Discharge of effluents.- Discharge of treated effluent in Eco-sensitive Zone shall be in accordance with the provisions of the General Standards for Discharge of Environmental Pollutants covered under the Environment Act and the rules made thereunder or standards stipulated by the State Government whichever is more stringent.

(9) Solid wastes.- Disposal and Management of solid wastes shall be as under:-

(a) the solid waste disposal and management in the Eco-sensitive Zone shall be carried out in accordance with the Solid Waste Management Rules, 2016, published by the Government of India in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change *vide* notification number S.O. 1357 (E), dated the 8th April, 2016; the inorganic material may be disposed in an environmental acceptable manner at site identified outside the Eco-sensitive Zone.

(b) safe and Environmentally Sound Management (ESM) of Solid wastes in conformity with the existing rules and regulations using identified technologies may be allowed within Eco-sensitive Zone.

(10) Bio-Medical Waste.– Bio Medical Waste Management shall be as under.-

(a) the Bio-Medical Waste disposal in the Eco-sensitive Zone shall be carried out in accordance with the Bio-Medical Waste Management, Rules, 2016 published by the Government of India in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change *vide* notification number G.S.R 343 (E), dated the 28th March, 2016.

(b) safe and Environmentally Sound Management of Bio-Medical Wastes in conformity with the existing rules and regulations using identified technologies may be allowed within the Eco-sensitive Zone.

(11) Plastic Waste Management.- The Plastic Waste Management in the Eco-sensitive Zone shall be carried out as per the provisions of the Plastic Waste Management Rules, 2016, published by the Government of India in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change *vide* notification number G.S.R. 340(E), dated the 18th March, 2016, as amended from time to time**.**

(12) Construction and Demolition Waste Management.- The Construction and Demolition Waste Management in the Eco-sensitive Zone shall be carried out as per the provisions of the Construction and Demolition Waste Management Rules, 2016 published by the Government of India in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change *vide* notification number G.S.R. 317(E), dated the 29th March, 2016, as amended from time to time.

(13) E-waste.- The e - waste management in the Eco-sensitive Zone shall be carried out as per the provisions of the E-Waste Management Rules, 2016, published by the Government of India in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change, as amended from time to time.

(14) Vehicular traffic.– The vehicular movement of traffic shall be regulated in a habitat friendly manner and specific provisions in this regard shall be incorporated in the Zonal Master Plan and till such time as the Zonal Master plan is prepared and approved by the Competent Authority in the State Government, the Monitoring Committee shall monitor compliance of vehicular movement under the relevant Acts and the rules and regulations made thereunder.

(15) Vehicular Pollution.- Prevention and control of vehicular pollution shall be incompliance with applicable laws and efforts shall be made for use of cleaner fuels.

(16) Industrial Units.– (i) On or after the publication of this notification in the Official Gazette, no new polluting industries shall be permitted to be set up within the Eco-sensitive Zone.

(ii) Only non-polluting industries shall be allowed within Eco-sensitive Zone as per the classification of Industries in the guidelines issued by the Central Pollution Control Board in February, 2016, unless so specified in this notification, and in addition, the non-polluting cottage industries shall be promoted.

(17) Protection of Hill Slopes.- The protection of hill slopes shall be as under.-

(a) the Zonal Master Plan shall indicate areas on hill slopes where no construction shall be permitted;

(b) construction shall not be permitted on existing steep hill slopes or slopes with a high degree of erosion.

4. List of activities prohibited or to be regulated within Eco-sensitive Zone.-All activities in the Eco sensitive Zone shall be governed by the provisions of the Environment Act and the rules made thereunder including the Coastal Regulation Zone, 2011 and the Environmental Impact Assessment Notification, 2006 and other applicable laws including the Forest (Conservation) Act, 1980 (69 of 1980), the Indian Forest Act, 1927 (16 of 1927), the Wildlife (Protection) Act 1972 (53 of 1972), and amendments made thereto and be regulated in the manner specified in the Table below, namely:-

TABLE

S. No. (1)	Activity (2)	Description (3)
	A. Prohibited Activities	
1.	Commercial mining, stone quarrying and crushing units.	(a) All new and existing mining (minor and major minerals), stone quarrying and crushing units are prohibited with immediate effect except for meeting the domestic needs of bona fide local residents including digging of earth for construction or repair of houses and for manufacture of country tiles or bricks for housing and for personal consumption; (b) The mining operations shall be carried out in accordance with the order of the Hon'ble Supreme Court dated the 4th August, 2006 in the matter of T.N. Godavarman Thirumulpad Vs. UOI in W.P.(C) No.202 of 1995 and dated the 21st April, 2014 in the matter of Goa Foundation Vs. UOI in W.P.(C) No.435 of 2012.
2.	Setting of industries causing pollution (Water, Air, Soil, Noise, etc.).	New industries and expansion of existing polluting industries in the Eco-sensitive Zone shall not be permitted: Provided that non-polluting industries shall be allowed within Eco-sensitive Zone as per classification of Industries in the guidelines issued by the Central Pollution Control Board in February, 2016, unless otherwise specified in this notification and in addition the non-polluting cottage industries shall be promoted.
3.	Establishment of major hydro-electric project.	Prohibited (except as otherwise provided) as per the applicable laws.
4.	Use or production or processing of any hazardous substances.	Prohibited (except as otherwise provided) as per the applicable laws.
5.	Discharge of untreated effluents in natural water bodies or land area.	Prohibited (except as otherwise provided) as per the applicable laws.
6.	Setting up of new saw mills.	New or expansion of existing saw mills shall not be permitted within the Eco-sensitive Zone.
7.	Setting up of brick kilns.	Prohibited (except as otherwise provided) as per the applicable laws.
	B. Regulated Activities	
8.	Commercial establishment of hotels and resorts.	No new commercial hotels and resorts shall be permitted within one kilometer of the boundary of the protected area or upto the extent of Eco-sensitive Zone, whichever is nearer, except for small temporary structures for eco-tourism activities: Provided that, beyond one kilometer from the boundary of the protected area or upto the extent of Eco-sensitive Zone whichever is nearer, all new tourist activities or expansion of existing activities shall be in conformity

S. No. (1)	Activity (2)	Description (3)
		with the Tourism Master Plan and guidelines as applicable.
9.	Construction activities.	(a) New commercial construction of any kind shall not be permitted within one kilometer from the boundary of the protected area or upto extent of the Eco-sensitive Zone, whichever is nearer: Provided that, local people shall be permitted to undertake construction in their land for their use including the activities mentioned in sub-paragraph (1) of paragraph 3 as per building bye-laws to meet the residential needs of the local residents. Provided further that the construction activity related to small scale industries not causing pollution shall be regulated and kept at the minimum, with the prior permission from the competent authority as per applicable rules and regulations, if any. (b) Beyond one kilometer it shall be regulated as per the Zonal Master Plan.
10.	Small scale non polluting industries.	Non polluting industries as per classification of industries issued by the Central Pollution Control Board in February, 2016 and non-hazardous, small-scale and service industry, agriculture, floriculture, horticulture or agro-based industry producing products from indigenous materials from the Eco-sensitive Zone shall be permitted by the competent Authority.
11.	Felling of trees.	(a) There shall be no felling of trees in the forest or Government or revenue or private lands without prior permission of the competent authority in the State Government. (b) The felling of trees shall be regulated in accordance with the provisions of the concerned Central or State Act and the rules made thereunder.
12.	Collection of Forest produce or Non-Timber Forest produce.	Regulated as per the applicable laws.
13.	Erection of electrical and communication towers and laying of cables and other infrastructures.	Regulated under applicable laws underground cabling may be promoted.
14.	Infrastructure including civic amenities.	Taking measures of mitigation as per the applicable laws, rules and regulations available guidelines.
15.	Widening and strengthening of existing roads and construction of new roads.	Taking measures of mitigation as per the applicable laws, rules and regulation and available guidelines.
16.	Undertaking other activities related to tourism like flying over the Eco-sensitive Zone area by hot air balloon, helicopter, drones, Microlites, etc.	Regulated as per the applicable laws.
17.	Protection of hill slopes and river banks.	Regulated as per the applicable laws.
18.	Movement of vehicular traffic at night.	Regulated for commercial purpose under applicable laws.
19.	Ongoing agriculture and horticulture	Permitted as per the applicable laws for use of locals.

S. No. (1)	Activity (2)	Description (3)
	practices by local communities along with dairies, dairy farming, aquaculture and fisheries.	
20.	Establishment of large-scale commercial livestock and poultry farms by firms, corporate and companies.	Regulated (except otherwise provided) as per the applicable laws except for meeting local needs.
21.	Discharge of treated waste water or effluents in natural water bodies or land area.	The discharge of treated waste water or effluents shall be avoided to enter into the water bodies and efforts shall be made for recycle and reuse of treated waste water. Otherwise the discharge of treated waste water or effluent shall be regulated as per the applicable laws.
22.	Commercial extraction of surface and ground water.	Regulated as per the applicable laws.
23.	Open Well, Bore Well etc. for agriculture or other usage.	Regulated and the activity should be strictly monitored by the appropriate authority.
24.	Solid Waste Management.	Regulated as per the applicable laws.
25.	Introduction of exotic species.	Regulated as per the applicable laws.
26.	Eco-tourism.	Regulated as per the applicable laws.
27.	Use of polythene bags.	Regulated as per the applicable laws.
28.	Commercial sign boards and hoardings.	Regulated as per the applicable laws.
C. Promoted Activities		
29.	Rain water harvesting.	Shall be actively promoted.
30.	Organic farming.	Shall be actively promoted.
31.	Adoption of green technology for all activities.	Shall be actively promoted.
32.	Cottage industries including village artisans, etc.	Shall be actively promoted.
33.	Use of renewable energy and fuels.	Bio-gas, solar light etc. shall be actively promoted.
34.	Agro-Forestry.	Shall be actively promoted.
35.	Use of eco-friendly transport.	Shall be actively promoted.
36.	Skill Development.	Shall be actively promoted.
37.	Restoration of degraded land/ forests/ habitat.	Shall be actively promoted.
38.	Environmental awareness.	Shall be actively promoted.
39.	Plantation of Horticulture and Herbals.	Shall be actively promoted.

5. Monitoring Committee for Monitoring the Eco-sensitive Zone Notification.- For effective monitoring of the provisions of this notification under sub-section (3) of section 3 of the Environment (Protection) Act, 1986, the Central Government hereby constitutes a Monitoring Committee, comprising of the following, namely:-

S. No.	Constituent of the Monitoring Committee	Designation
(i)	District Collector, Thiruvarur	Chairman, ex officio
(ii)	A representative of Non-government organisation working in the field of	Member;

	wildlife conservation to be nominated by State Government	
(iii)	An expert in Biodiversity nominated by the State Government	Member;
(iv)	Revenue Division Officer, Mannargudi	Member;
(v)	Project Officer, District Rural Development Agencies, Thiruvarur	Member;
(vi)	An expert in Ecology and Environment to be nominated by the State Government	Member;
(vii)	A representative from State Public Works Department	Member;
(viii)	A representative from State Pollution Control Board	Member;
(ix)	Tehsildar, Pattukkottai	Member;
(x)	District Forest Officer, Thiruvarur	Member-Secretary.

6. Terms of reference. – (1) The Monitoring Committee shall monitor the compliance of the provisions of this notification.

(2) The tenure of the Monitoring Committee shall be for three years or till the re-constitution of the new Committee by the State Government and subsequently the Monitoring Committee shall be constituted by the State Government.

(3) The activities that are covered in the Schedule to the notification of the Government of India in the erstwhile Ministry of Environment and Forests number S.O. 1533 (E), dated the 14th September, 2006, and are falling in the Eco-sensitive Zone, except for the prohibited activities as specified in the Table under paragraph 4 thereof, shall be scrutinised by the Monitoring Committee based on the actual site-specific conditions and referred to the Central Government in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change for prior environmental clearances under the provisions of the said notification.

(4) The activities that are not covered in the Schedule to the notification of the Government of India in the erstwhile Ministry of Environment and Forests number S.O. 1533 (E), dated the 14th September, 2006, and are falling in the Eco-sensitive Zone, except for the prohibited activities as specified in the Table under paragraph 4 thereof, shall be scrutinised by the Monitoring Committee based on the actual site-specific conditions and referred to the concerned regulatory authorities.

(5) The Member-Secretary of the Monitoring Committee or the concerned Deputy Commissioner(s) shall be competent to file complaints under section 19 of the Environment Act, against any person who contravenes the provisions of this notification.

(6) The Monitoring Committee may invite representatives or experts from concerned Departments, representatives from industry associations or concerned stakeholders to assist in its deliberations depending on the requirements on issue to issue basis.

(7) The Monitoring Committee shall submit the annual action taken report of its activities as on the 31st March of every year by the 30th June of that year to the Chief Wildlife Warden in the State as per proforma appended at Annexure V.

(8) The Central Government in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change may give such directions, as it deems fit, to the Monitoring Committee for effective discharge of its functions.

7. The Central Government and State Government may specify additional measures, if any, for giving effect to provisions of this notification.

8. The provisions of this notification shall be subject to the orders, if any passed or to be passed by the Hon'ble Supreme Court of India or High Court or the National Green Tribunal.

[F. No. 25/29/2018-ESZ]

Dr. SATISH C. GARKOTI, Scientist 'G'

ANNEXURE- I

BOUNDARY DESCRIPTION OF ECO-SENSITIVE ZONE OF THE POINT CALIMERE WILDLIFE SANCTUARY

North

Starting from tri-junction point of un-Survey Numbers 546, 547 and 552 of No. 168 Palanjur Village, the boundary runs generally eastwards along the southern side of Survey Numbers 547, 548, 549, 550 and 551 of Palanjur village and meets south west corner of Survey Number 954 of V.No. 165, Thamarankottai village, which is also bi-junction of old Survey Number 529 of 186, Palanjur village and Survey Field Number 116 of No. 71, T.Maravakadu village and thence along the eastern sides of Survey Field Number 111 of No. 71 Maravakadu village to the north west corner of Survey Field Number 103 of No. 71 of T.Maravakadu village which is also a tri-junction of Survey Field Numbers 111, 109 and 103 of the said T.Maravakadu village and then east towards east along the southern side of survey Field Number 103, Western side of Survey Field Numbers 359, 360 and 373, western and southern sides of Survey Field Numbers 374, Southern ides of Survey Field Numbers 375, 376, 377, 378, 379, 390, 401, 402, 403, 404, 447, 450, 453, 454, 486, 487 and 490 all of the said T.Maravakadu village to the tri-junction point of Survey Field Number 490 of No. 71 T.Maravakadu village, Survey Number 116 of V.No. 75, T.Maravakadu village and Survey Number 317 of No. 83, T.Vadakadu village and then east along the southern side of Survey Field Number No. 317 to the tri-junction of Survey Field Number 317 of the No. 83 T.Vadakadu village, Survey Field Number 212 of No. 74 Pudukottagam village of Pattukottai taluk and Survey Field Number 351 of 135 and then runs north along east the eastern boundary of Survey Number 348 and then along western boundary of Survey Number.347, eastern boundary of 346 of No. 79 Muthupet village till it meets the southeast corner of Survey Number.346 to the tri-junction of No. 74, Pudukottagam village No.79, Muthupet and Survey Number.347 of No.135 Thuraikadu village and then runs to a point which is a theodolite 6 links from and at a bearing 1510. The boundary then runs to station No. 2, a point at distance of 500 links and a bearing of 134.5 from the starting point and thence with the following bearings and distances.

Form Station	To Station	Magnetic Bearings	Distance links)
2	3	90.50	2510
3	4	104.75	1242
4	5	101.75	1834
5	6	91.75	2367
6	7	102.00	1767
7	8	121.75	1767
8	9	110.75	2116
9	10	111.25	4612
10	11	110.00	4268
11	12	95.75	3396
12	13	93.00	300
13	14	93.00	2503
14	15	95.00	2574
15	16	95.75	2905
16	17	105.50	4453
17	18	105.50	3496
18	19	105.50	4761
19	20	195.50	3974
20	21	105.50	3716
21	22	106.00	3055
22	31	134.00	9164

North East

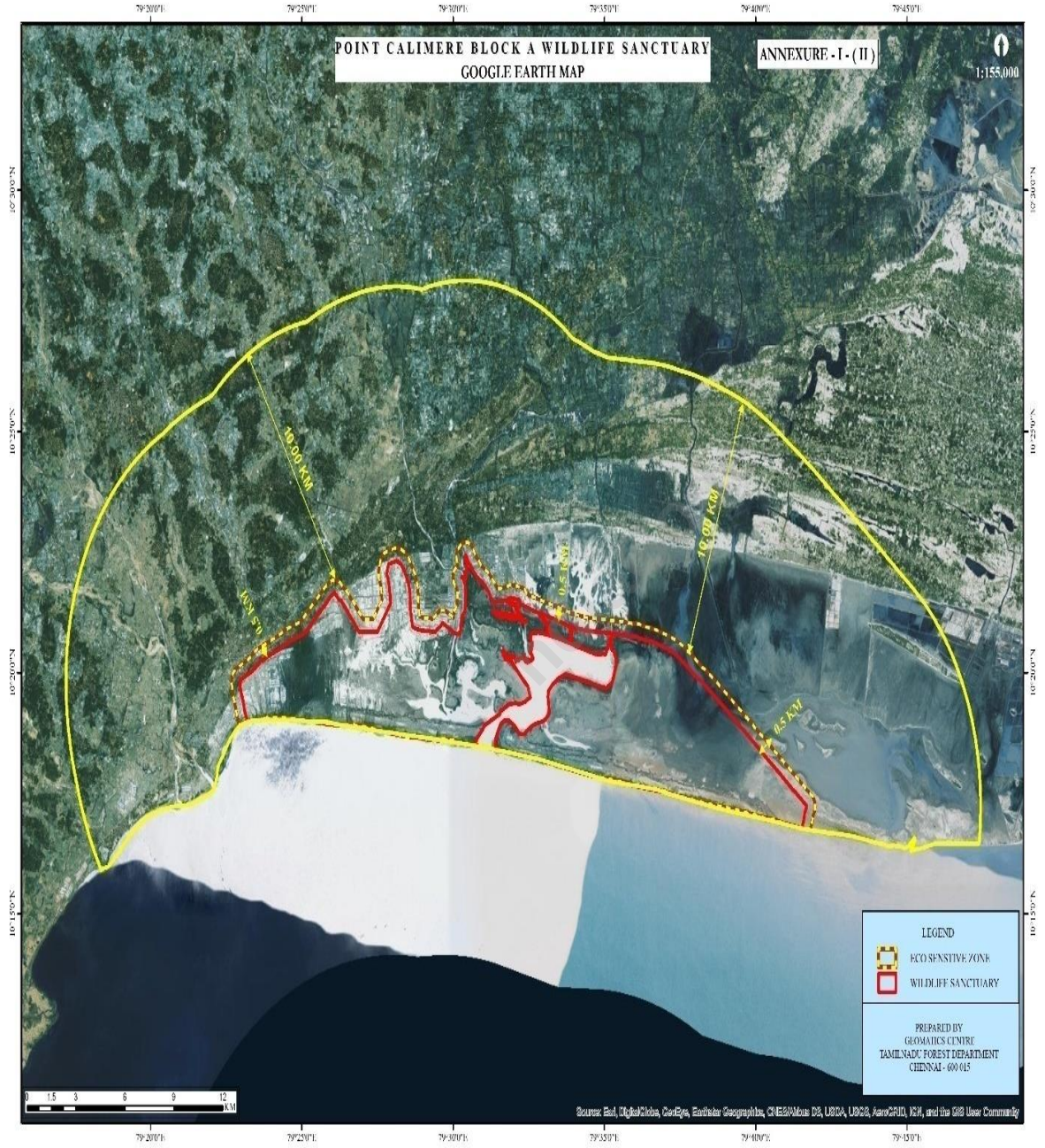
The boundary starts from Thamarankottai village runs generally eastwards along the southern sides of survey Field Numbers 964, 966, 968 and 968 western and southern sides of Survey Field Numbers 969 (all of Thamarankottai village) to the southern eastern corner of Survey Field Number No. 969 which is also a bi-junction of the Survey Field Number 969 of Thamarankottai village

East	Hence from station 31 to 32 the boundary runs south for a distance of 2260 links at a bearing of 204.50 till it meets the Palk Strait.
South East	Thuraikadu village of Thiruthuraipoondi taluk and then the boundary generally along the western boundary of Survey Numbers. 478, 479 and 480 of No. 82, Turaikadu village and then the boundary runs along the southern boundary of 480, 474, 473, 467, 459, 457, 450, 449, 351, 443, 435, 350, 432, Thuraikadu village
South	The boundary runs along the coast of Palk Strait till it reaches the southwest corner of Palanjur Bit – 2 RF which is also the junction point of Palk Strait and Survey Number. 556 of Palanjur Village.
South West	Hence the boundary ends in Palanjur Village, R.S. No. 547, 548, 569, 550 & 551.
West	Hence the boundary runs generally towards north to a distance of 366.8 metres along the western boundary of Survey Number. 558, 557 all of Palanjur Village and thence the boundary runs north along the eastern side of Survey Number. 557 and reaches the tri-junction point of Survey Numbers. 557, 529 and 552 of Palanjur Village. Thence the boundary runs along the southern, eastern and northern sides of Survey Number. 552 till it reaches the starting point.
North West	Hence the boundary runs generally towards north to a distance of 366.8 metres along the western boundary of Survey Number. 557 all of Palanjur Village.

IndiaCode

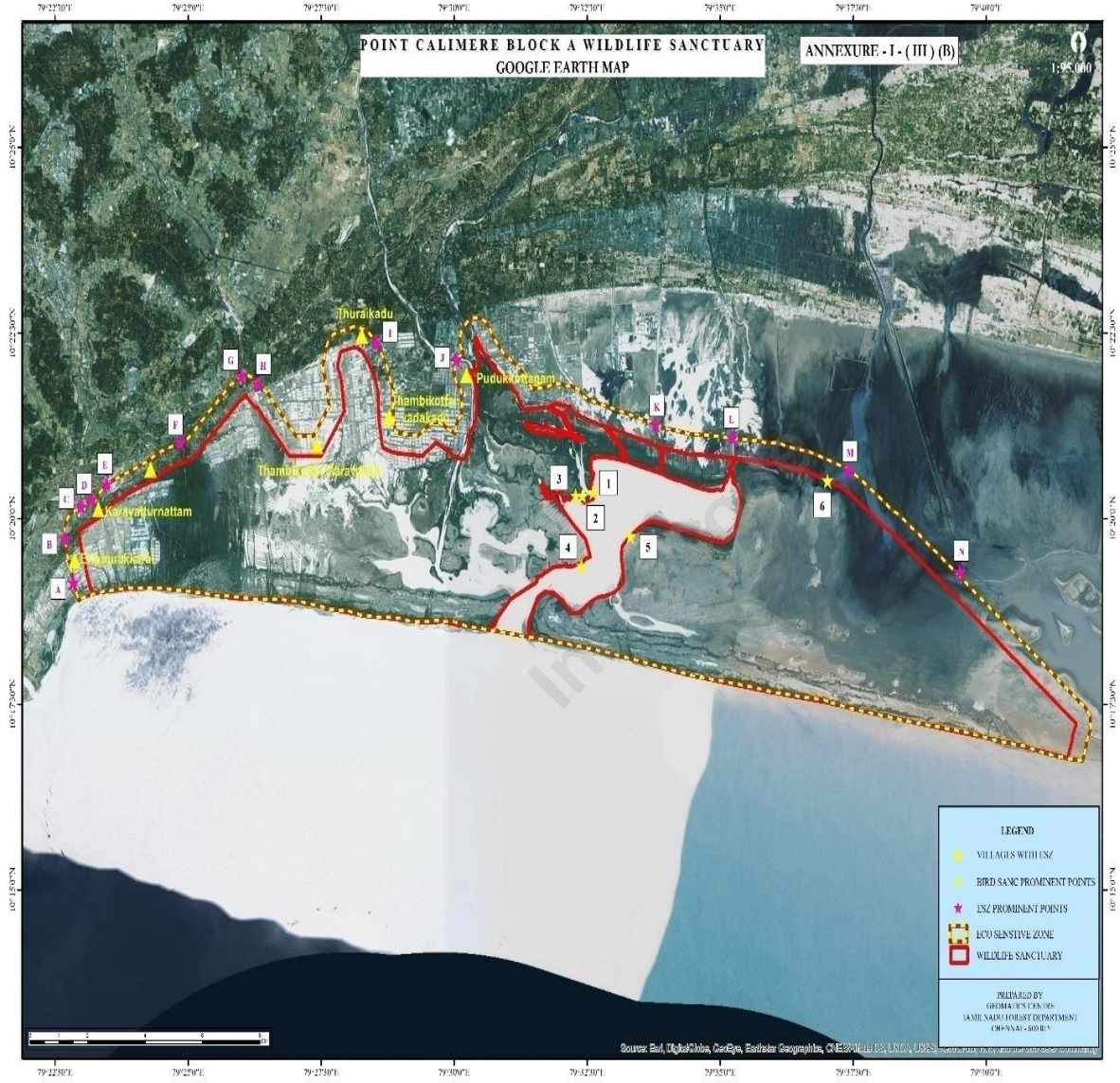
ANNEXURE- IIA

GOOGLE MAP OF ECO-SENSITIVE ZONE OF THE POINT CALIMERE BLOCK-A WILDLIFE SANCTUARY



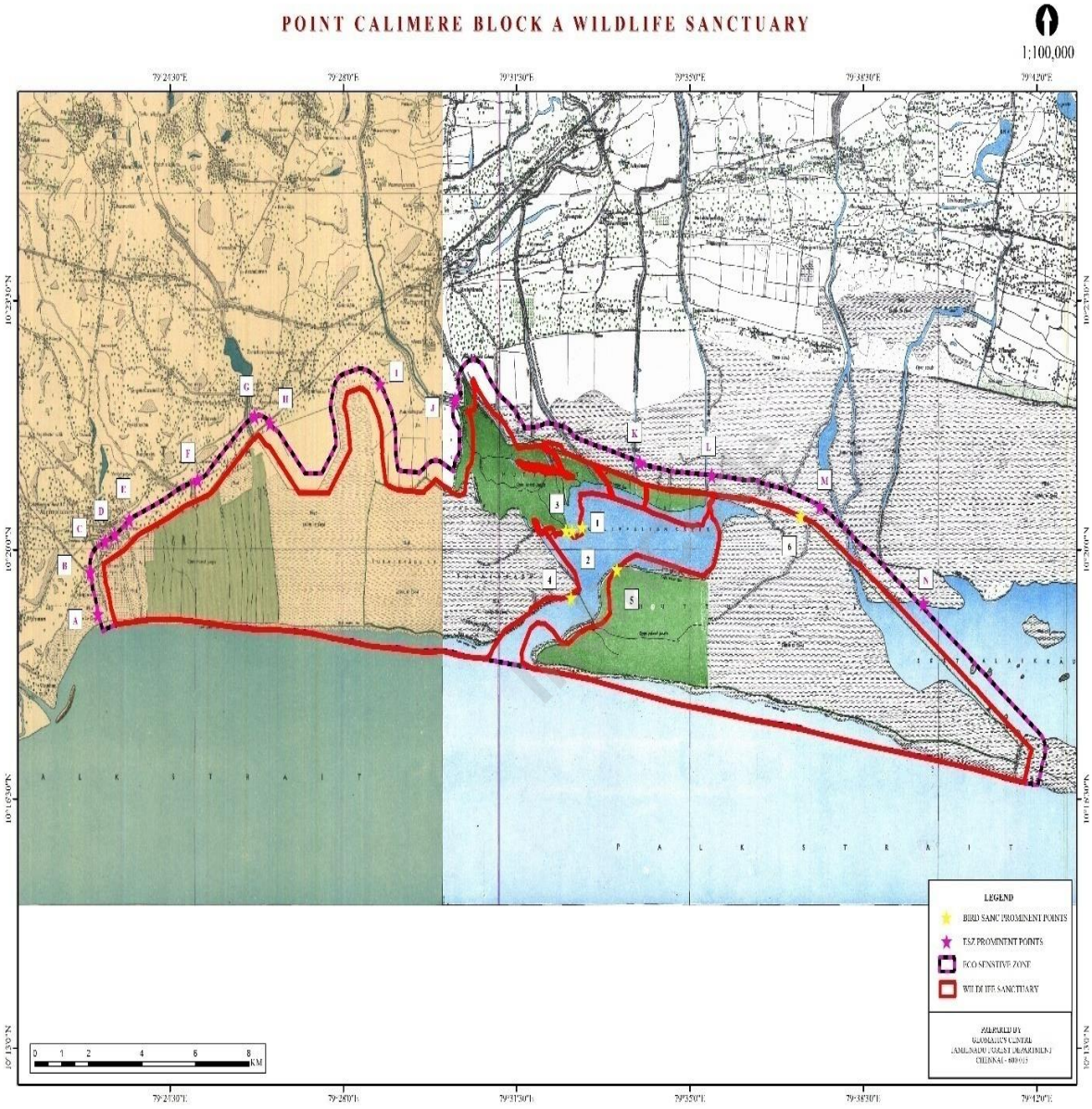
ANNEXURE- IIB

GOOGLE MAP OF ECO-SENSITIVE ZONE OF POINT CALIMERE BLOCK-A WILDLIFE SANCTUARY ALONG WITH GEO-COORDINATES POINTS AT PROMINENT LOCATION



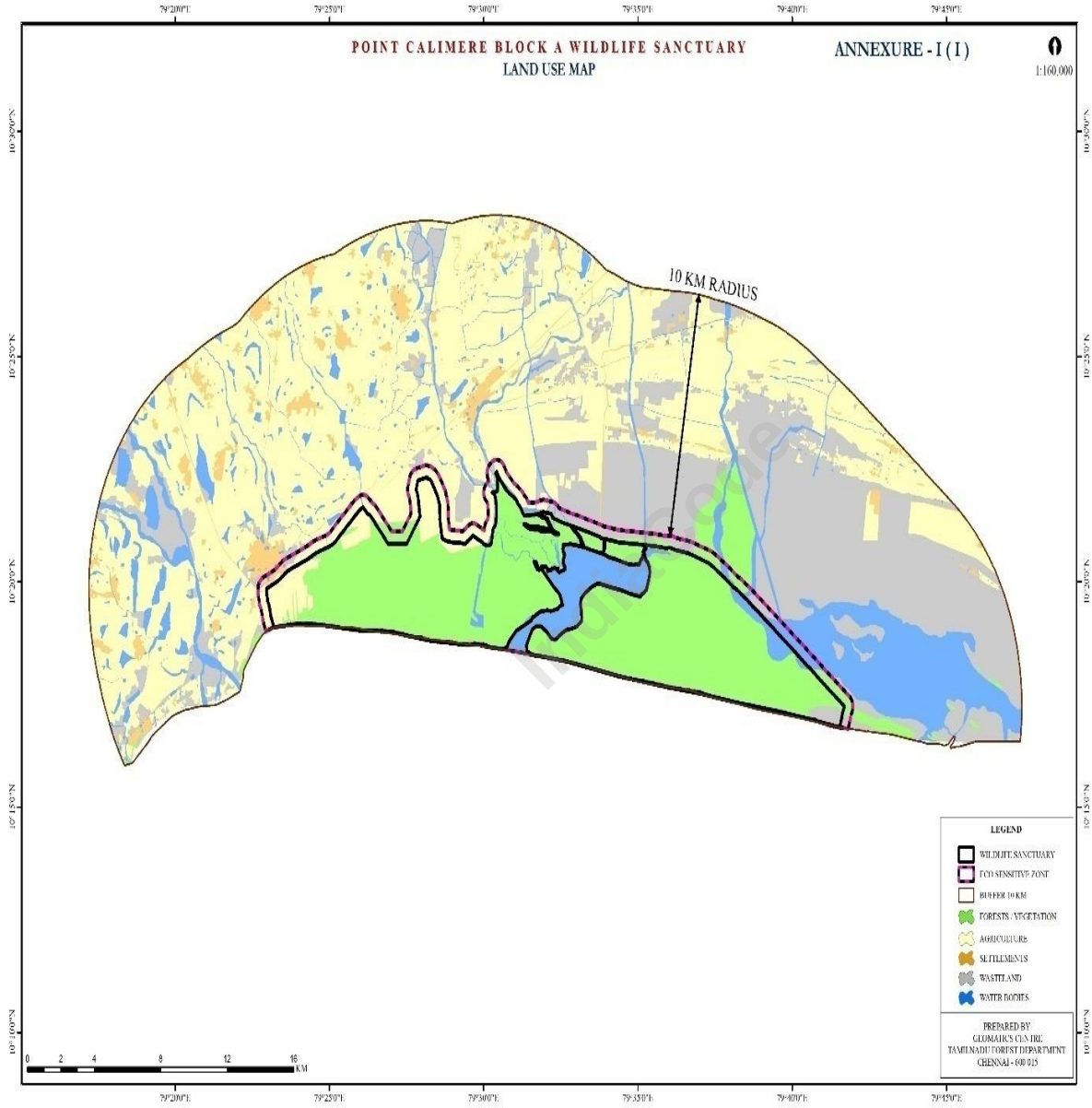
ANNEXURE- IIC

MAP OF ECO-SENSITIVE ZONE OF POINT CALIMERE BLOCK-A WILDLIFE SANCTUARY ON SURVEY OF INDIA (SOI) TOPOSHEET



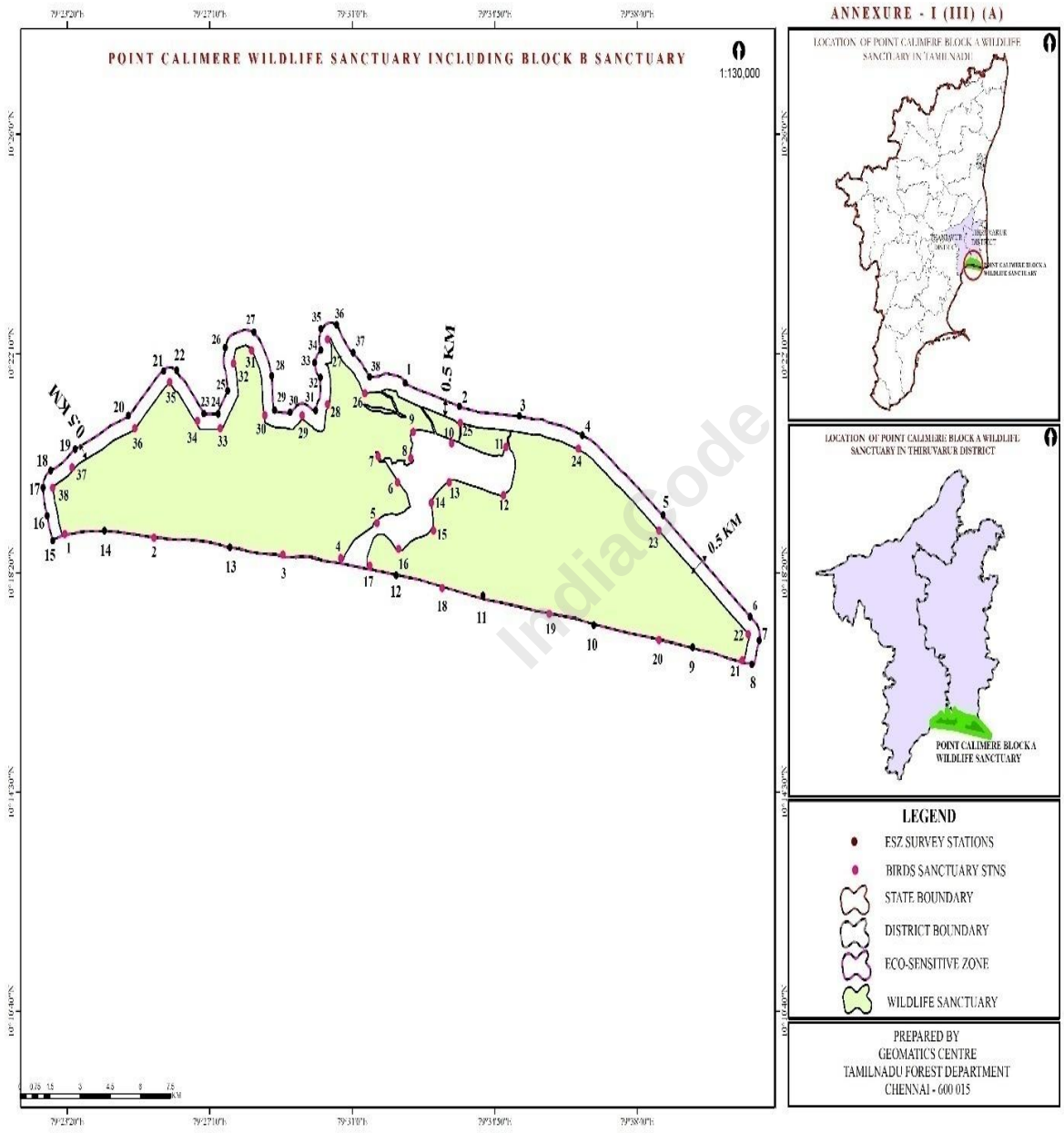
ANNEXURE- IID

LANDUSE PATTERN MAP OF ECO-SENSITIVE ZONE OF POINT CALIMERE BLOCK-A WILDLIFE SANCTUARY ALONG WITH 10 KM BUFFER



ANNEXURE- IIE

MAP OF ECO-SENSITIVE ZONE OF POINT CALIMERE BLOCK-A WILDLIFE SANCTUARY ALONG WITH LATITUDE AND LONGITUDE OF PROMINENT LOCATIONS



ANNEXURE-III

TABLE A: LATITUDE-LONGITUDE OF PROMINENT LOCATIONS OF POINT CALIMERE BLOCK-A WILDLIFE SANCTUARY, TAMIL NADU

S. No.	Location / Direction of Prominent Point	Latitude (N) DMS format	Longitude (E) DMS format
1.	SW	10°20'5"	79°50'46"
2.	SW	10°20'7"	79°51'26"
3.	S	10°20'6"	79°51'53"
4.	S	10°19'34"	79°51'58"
5.	SE Upputhottam Boat Jetti	10°19'10"	79°52'0"
6.	SE	10°18'40"	79°52'3"
7.	SE Watch Tower & Resting Shed	10°18'13"	79°52'4"
8.	SE New Chief Corner	10°18'4"	79°52'20"
9.	SE	10°17'45"	79°52'25"
10.	SE	10°17'27"	79°52'14"
11.	SE	10°17'8"	79°51'42"
12.	SE	10°16'50"	79°51'2"
13.	SE Jellimunai Boat Jetti	10°16'38"	79°50'15"
14.	SE	10°16'40"	79°50'0"
15.	SE	10°16'57"	79°49'57"
16.	SE	10°17'10"	79°49'48"
17.	S	10°17'26"	79°50'3"
18.	S	10°17'43"	79°50'6"
19.	SE	10°17'55"	79°49'51"
20.	SE	10°18'15"	79°49'56"
21.	E	10°18'23"	79°49'34"
22.	E	10°18'34"	79°49'21"
23	NE	10°18'39"	79°49'19"
24	NE Watch Tower, Thondiyakkadu	10°18'43"	79°49'22"
25.	NE	10°18'45"	79°49'39"
26	N	10°18'47"	79°49'50"
27.	N	10°18'49"	79°49'52"
28.	N	10°18'48"	79°49'57"
29.	N	10°18'50"	79°50'6"
30.	N	10°18'50"	79°50'9"
31.	N	10°19'5"	79°50'12"
32.	NW	10°19'22"	79°50'14"
33.	NW	10°19'21"	79°50'18"
34.	NW	10°19'27"	79°50'19"
35.	NW	10°19'32"	79°50'21"

IndiaCode

36.	NW	10°19'33"	79°50'19"
37.	W	10°19'36"	79°50'17"
38.	W	10°19'45"	79°50'18"

TABLE B: LATITUDE-LONGITUDE OF PROMINENT LOCATIONS OF ECO-SENSITIVE ZONE

S. No.	Location / Direction of Prominent Point	Latitude (N) DMS format	Longitude (E) DMS format
1.	N	10°21'40"	79°32'26"
2.	N	10°21'15"	79°33'53"
3.	N	10°21'5"	79°35'30"
4.	NE	10°20'44"	79°37'12"
5.	NE	10°19'21"	79°39'22"
6.	E	10°17'34"	79°41'42"
7.	E	10°17'9"	79°41'57"
8.	SE	10°16'44"	79°41'45"
9.	SE	10°17'2"	79°40'10"
10.	SE	10°17'25"	79°37'30"
11.	SE	10°17'56"	79°34'31"
12.	S	10°18'18"	79°32'11"
13.	S	10°18'47"	79°27'42"
14.	SW	10°19'4"	79°24'20"
15.	SW	10°18'54"	79°22'57"
16.	W	10°19'20"	79°22'48"
17.	W	10°19'49"	79°22'41"
18.	W	10°20'7"	79°22'53"
19.	NW	10°20'30"	79°23'33"
20.	NW	10°21'5"	79°24'59"
21.	NW	10°21'52"	79°25'56"
22.	NW	10°21'53"	79°26'17"
23.	NW	10°21'8"	79°27'1"
24.	N	10°21'7"	79°27'24"
25.	N	10°21'31"	79°27'39"
26.	N	10°22'16"	79°27'35"
27.	N	10°22'33"	79°28'21"
28.	N	10°21'47"	79°28'50"
29.	N	10°21'11"	79°28'54"
30.	N	10°21'9"	79°29'20"
31.	N	10°21'11"	79°30'1"
32.	N	10°21'45"	79°30'9"
33.	N	10°22'1"	79°29'60"
34.	N	10°22'14"	79°30'9"
35.	N	10°22'36"	79°30'9"

IndiaCode

36.	N	10°22'40"	79°30'35"
37.	N	10°22'11"	79°31'2"
38	N	10°21'46"	79°31'28"

ANNEXURE-IV

LIST OF VILLAGE AREA COMING UNDER ECO-SENSITIVE ZONE OF POINT CALIMERE BLOCK-A WILDLIFE SANCTUARY ALONG WITH GEO-COORDINATES

S. No.	Village Name	Type of Village	Taluk	District	Latitude (N) DMS format	Longitude (E) DMS format
1.	Erippurakkarai	Revenue Village	Pattukkottai	Thanjavur	10°19'26"	79°22'52"
2.	Thambikottai vadakadu	Revenue Village	Thiruthuraipoondi	Thiruvarur	10°21'22"	79°28'47"
3.	Pudukkottagam	Revenue Village	Pattukottai	Thanjavur	10°21'56"	79°30'14"
4.	Thuraikadu	Revenue Village	Thiruthuraipoondi	Thiruvarur	10°22'28"	79°28'16"
5.	Thambikottai Maravakadu	Revenue Village	Thiruthuraipoondi	Thiruvarur	10°20'59"	79°27'26"
6.	Karayattu nattam	Revenue Village	Pattukottai	Thanjavur	10°20'7"	79°23'19"

IndiaCode

ANNEXURE –V

Prforma of Action Taken Report: Eco-sensitive Zone Monitoring Committee.-

1. Number and date of meetings.
2. Minutes of the meetings: (mention noteworthy points. Attach minutes of the meeting as separate Annexure).
3. Status of preparation of Zonal Master Plan including Tourism Master Plan.
4. Summary of cases dealt with rectification of error apparent on face of land record (Eco-sensitive Zone wise). Details may be attached as Annexure.
5. Summary of cases scrutinised for activities covered under the Environment Impact Assessment Notification, 2006 (Details may be attached as separate Annexure).
6. Summary of cases scrutinised for activities not covered under the Environment Impact Assessment Notification, 2006 (Details may be attached as separate Annexure).
7. Summary of complaints lodged under section 19 of the Environment (Protection) Act, 1986.
8. Any other matter of importance.

Uploaded by Dte. of Printing at Government of India Press, Ring Road, Mayapuri, New Delhi-110064
and Published by the Controller of Publications, Delhi-110054.
MANOJ KUMAR VERMA Digitally signed by MANOJ KUMAR VERMA Date: 2020.02.04 21:50:54 +05'30'